कुछ पता न पाया।" इस खबरसे वालेसका फाडनकी प्रेतमूर्तिका विश्वास और पक्का होगया।

वालेस उस जङ्गलमें अब अधिक दिन ठहरनेको राजी न हुआ तब उस स्त्रीने उदारतापूर्वक उसे बहुतसा रुपया दिया और अपने बड़े और मझले बेटेको उसके साथ कर दिया। उसके चाचाने उन लोगोंको बढ़िया घोड़े और वीरोंकी पोशाकें दीं। उसी रातको वालेसने कार्ले, स्टिफिन और उस स्त्रीके दोनों लड़कोंसहित डनडफ की तरफ कूच किया। सर जौन ग्रेहम नामका एक बूढ़ा नाइट—जिसने लर्गासकी लड़ाईमें बड़ी बहादुरी दिखाई थी—यहांका मालिक था। उसने बुढ़ापेमें शान्तिसे रहनेके लिये लाचार होकर एडवर्डसे सन्धिकरली थी किन्तु उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। वालिसको पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। वालेस बड़े आदरसे उसके किलेमें तीन दिन रहा। ग्रेहमके उसीके नामका एक पुत्र था। उसने यौवनावस्थामेंही प्राक्लिक युद्धमें स्काटराज अलकज़ेण्डरको बड़ी मदद की थी इस लिये उन्होंने उसे "वारविकका नाइट" की उपाधि दी। इस वीर युवकसे वालेसकी बड़ी मित्रता होगई। यह मित्रता मरते दम तक न टूटी। ग्रेहमने जीतेजी वालेसका साथ न छोड़ा। बनमें किलेमें रास्तेमें लड़ाईमें जहां वालेस जाता वहां ग्रेहम छायाकी तरह उसके पीछे पीछे रहताथा। वालेसके कष्ट दुःखपूर्णमय जीवनमें ग्रेहम उसका प्रधान शान्तिस्थल था।

वालेस वहांसे चलने लगा तो ग्रेहम उसके साथ चलनेको तय्यार हुआ किन्तु वालेसने मना किया, कहा—ऐसी आफतकी जिन्दगीमें कूदनेसे पहले तुम्हें खूब खबरदारी सीखनी होगी, तब मैं तुम्हें लेजाऊंगा। इस बीचमें उसने उसको यथाशक्ति सेना संग्रह करने का अनुरोध किया। ग्रेहमने यह प्रस्ताव मान लिया और कहा कि तुम्हारी खबर पातेही मैं सेना सहित मददको पहुंचूंगा।

इधर आयरमें पर्सीके पास वालेसकी अलौकिक क्षमताकी खबर पहुंची। अङ्गरेजी सेनामें हलचल मच गई। सबके चेहरे

पर गम्भीरता छागई। किसी किसीने यह कहकर मनको प्रबोध दिया कि जब वालेसको स्टर्लिङ्ग पुल पार होते किसीने नहीं देखा तो मालूम होता है कि वह फोर्थमें डूब गया। किन्तु पर्सीको यह विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि वालेस बड़ा बली और चतुर है सम्भव नहीं कि वह जलमें डूब गया हो। इस लिये उनका मन आगेकी बात सोचकर घबराया। इस समय सर जान स्टुअर्ट सेन्ट जानस्टनके शेरिफ बनाये गये।

वालेसने गिलबंकमें पहुंचकरही वारसबीमें चाचा सर रैनाल्डको, रिकार्टनमें भाई एडम वालेसको और दोनों मित्र बायड और करे यर को अपना हाल बतानेके लिये कार्लेको भेजा। वालेसकी सफलता का समाचार सुनकर वह लोग बेहद खुश हुए और उसी वक्त उस की मददके लिये बहुतसा रुपया भेजा।

जिन दिनों वालेस गिलबङ्कमें था उन दिनों कौतूहलमें आकर कभी कभी लेनार्कशायरकी तरफ जाया करता था। उसकी तलवार अकसर अङ्गरेजोंका खून पीती थी। वह रास्तेमें जहां तितर बितर अङ्गरेजी सेना देखता उस पर हमला करता। उसकी तेज तलवारसे किसीकी रक्षा न होती, यहांतक कि खबर देनेके लिये भी कोई लौटने नहीं पाता था। हेसिलरीग लेनार्कसायरके शेरिफ थे। उनका मिजाज बड़ा कड़ा और स्वाधीन था प्रजा उनको यम के समान समझती थी। उनको इस बातका बड़ा आश्चर्य हुआ कि कौन इस तरह मेरी सेना बरबाद कर रहा है। उन्होंने अपने सैनिकोंको हुक्म दिया कि कहीं जाओ तो आत्मरक्षाके लिये इकट्ठे होकर जाओ। वालेस जब शत्रु सेना अधिक देखता तब कुछ छेड़ छाड़ न करता। उसके चारों साथी छाया तरह उसके पीछे पीछे रहते थे।

## सातवाँ अध्याय।

वालेसका प्र य—लाकमिबेन और क्राफोर्ड किले पर अधिकार।

वीरंका हृदय भी प्रणयसे खाली नहीं है। ऐसा कोई हृदय नहीं देखा जाता जहां प्रणयकी अमलदारी न हो। राजाकी अटारी से लेकर दरिद्रकी झोपड़ी तक सर्वत्र प्रणय विराजमान है। अनुराग संसारत्यागी संन्यासियोंके हृदयमें भी प्रवेश करता है। वालेस राजनीतिक संन्यासी होकर भी इसके हाथसे न बच सका। परमयोगी दिगम्बर भी इसके हाथसे नहीं बचे। जिसका हृदय स्वदेश की दुर्दशासे शोकाकुल था, जिसने प्रण किया था कि स्वदेशका उद्धार किये बिना किसी तरहका दुनियावी सुख नहीं करूंगा वह आज प्रेमका जोर रोक न सका। उसने इसको जातीयव्रतमें खलल डालनेवाला बताकर हृदयको बहुत समझाया किन्तु हृदयने कुछ ख्याल नहीं किया। लेनार्कशायरकी कोई अलौलिक सुन्दरी मनोमोहिनी उच्च-वंशोद्भवा कोमलस्वभावा रमणी उसके चित्तविकारका कारण थी।

लेनार्कशायरमें लेमिङ्गटन नामका एक शहर है। वहां ब्रुगडफुट नामका एक धनी आदमी रहता था। यह स्त्री उसीकी लड़की थी। लड़कपनहीसे पिता माता और भ्राताके वियोगसे अपार धनकी स्वामिनी हुई थी। हेसिलरीगके हाथसेही उसके एक मात्र भाईकी मृत्यु हुई। असहाया बालिकाको आश्रय देनेके बदले उसने उससे बहुतसा रुपया लिया। ऐसा भी कहते हैं कि हेसिलरीगने उस अपार धनकी स्वामिनीको अपने बड़े पुत्रसे ब्याह देनेका इरादा किया था। स्त्री दूसरा उपाय न देखकर वालेसकी शरणमें गई। उसने अपनी दासीसे वालेसको बुला भेजा। दासी के साथ वालेस बागीचेकी खिड़कीसे स्त्रीके घर पहुंचा। उसकी

मेहमानदारीके लिये कई प्रकारके भोजन बनाये गये थे। युवती युवक पहलीही मुलाकातमें एक दूसरे पर प्रेमासक्त होगये। युवतीने कहा—"मैंने आजसे आपके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर दिया। जलथल, बन जङ्गल, रणभूमि या शान्तिनिकेतन—आप जब जहां रहेंगे, दासी छायाकी भांति आपके पीछे पीछे रहेगी, मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि आपके सिवा और किसी पुरुषकी पत्नी न हूंगी। अब प्रार्थना यही है कि दासीको अपनाइये।" वालेसका हृदय रमणीके प्रेमसे पिघल गया किन्तु वह बिलकुल विवाह करनेको राजी न हुआ। कहा—"जितने दिन स्काटलेण्ड शत्रुके हाथमें रहेगा उतने दिन विवाहमें मेरा अधिकार नहीं है। जिस दिन स्वदेशको शत्रु रूपी कांटेसे अलग कर सकूंगा उसी दिन तुम्हारा पाणिग्रहण करूंगा। मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हें छोड़कर और किसी स्त्रीको पत्नी नहीं बनाऊंगा।" इसी तरह दोनों प्रतिज्ञा करके एक प्रकार नैतिकदम्पती होगये। उसी दिनसे वह दोनों परस्पर पति पत्नीकासा व्यवहार करने लगे। नैतिक विवाह करके दोनोंने बड़े आनन्दसे भोजन किया।

वालेस दूसरे दिन तड़के चारों साथियोंसहित गिलबर्टको छोड़कर कर्होंडकी तरफ रवानाहोगया। कर्होंडमें उसका भतीजा टाम हालिडे और भाई एडवर्ड लीटल रहते थे। उन्होंने समझ लिया था कि वालेस लड़ाईमेंमारागया। आजअचानक उसे देखकर आनन्दसेउछल वालेस वहां तीन दिन रहा। चौथे दिन लाकमेबिनकी तरफ चला। वह सब मिलाकर १६ सवार होगये हैं। शहरसे कुछ दूर नाकउड नामक बनमें सबको छोड़कर वालेस लीटल कार्ले और हालिडेको लेकर शहरमें पैठा। वहां किसी सरायमें भोजन बनानेका हुक्म देकर घोड़ोंको वहीं बांध दिया और आप पासके गिरजेमें जाकर भजन सुनने लगे। उनकी गैरहाजिरीमें क्लिफोर्डने चार सहचरों सहित उस सरायमें आकर पूछा—"यह किसके घोड़े बंधेहैं?" भठियारीने कहा—"हुजूर! पश्चिमसे चार भले आदमी आकर मेरे

यहां ठहरे हैं उन्हींके चारों घोड़े हैं।" घमण्डी क्लिफोर्डने कहा—"वह भूत ऐसे सुन्दर घोड़े लेकर क्या करेंगे?"—यह कहकर उसने चारोंकी दुम काट डाली। भठियारी चिल्ला उठी। उसकी आवाज सुनकर वालेस और उसके साथी आपहुंचे। इधर क्लिफोर्ड दुम काटकर रफूचक्कर हुआ। वालेस असली हाल सुनकर क्रोधसे लाल होगया तो भी इस दिल्लगीकी बातसे उसकी हंसी न रुकी। उसने साथियों सहित क्लिफोर्डका पीछाकिया और पुकारकर हंसीसे कहने लगा—"यार! मालूम होगया कि तुम एक चतुर हजाम हो, मैं भी एक हजाम हूं पश्चिमसे अच्छे रोजगारकी तलाशमें आया हूं। दिल बहुत चाहता है कि तुम्हें अपना इल्म दिखाऊं।" यह कहते कहते वालेस क्लिफोर्डके पास पहुंच गया। पहुंचनेके साथ उसकी भीम तलवारने क्लिफोर्डको दो टुकड़े कर डाला। एक औरको भी मारा। वालेसके साथियोंने बाकी तीनको मार डाला।

वह लोग क्लिफोर्डका घोड़ा लेकर डेरे पर लौट आये और रसोईकी तय्यारी तक न ठहरे। भठियारीको भोजनका दाम चुका अपने दुमकटे घोड़ों और क्लिफोर्डके सुन्दर घोड़े को लेकर चलदिये।

क्लिफोर्डके मारे जानेकी खबर नगरमें फैलतेही अङ्गरेजी किले से २७ सवार वालेस और उसके साथियोंकी खोजमें निकले।

वालेस शहरसे निकलकर अपने दलमें मिलनेके लिये फुर्तीसे लॉकउड बनकी तरफ चला। वह बन बहुत छोटा था इसलिये वहां अत्र और बचाव न देखकर पहाड़ पर चढ़नेकी तय्यारी की। सब घोड़ोंसे उतरकर धीरे धीरे पहाड़पर चढ़ने लगे। इतनेमें दूरसे अङ्गरेजी घोड़ोंकी टाप सुनाई दी, तेज घोड़ों पर अङ्गरेज सैनिक सवार हैं उनकी नङ्गी तलवारों पर सूर्यकी किरणें पड़कर आंखोंमें चका-चौंध लगा रही हैं। वालेसने सबको घोड़े पर सवार होकर ईस्टर मूरकी तरफ जानेका हुक्म दिया किन्तु उसे खटका हुआ कि जखमी घोड़े जवाब न देदें। अङ्गरेजी सेनाने सामने आकरही वालेस दो क्वार्टरोंकी घायल किया। वालेस दो साथियोंके बदमसे

खून बहते देखकर क्रोधसे मत्त हाथीकी तरह अकेले अङ्गरेजों पर टूट पड़ा। क्षण भरमें उसकी तलवारने पन्द्रह सवारोंको जमीन पर सुला दिया। बाकी सवार यह बेढब मामला देखकर किलेकी तरफ सरके। स्काटोंने भागती हुई अङ्गरेजी सेनाका पीछा किया। राहमें हालिडेने देखा कि दो सौ अङ्गरेजी सेना पासके जङ्गलमें छिपी हुई है तब उसने चाचाको लौटनेकी सलाह दीं।

जङ्गलकी अङ्गरेज सेनाने जब देखा कि स्काट कर्कौडकी तरफ भागा चाहते हैं तब वहांसे निकलकर उनका पीछा किया। सर ह्यू नामके एक प्रवीण अंङ्गरेज सेनापति इस सेनाके नायक थे। वह बखतर पहने हुए एक खूबसूरत घोड़े पर सवार थे। वालेस एक पेड़से पीठ सटाये सर ह्यूकी बाट देखता था। ज्योंही वह उसके सामने आये उसकी कराल तलवार उनके सिरके दो टुकड़े करके गले पर आकर ठहरी। वालेस चट ह्यूके घोड़े पर सवार होगया। सेनापतिकी मृत्यु देखकर अङ्गरेजोंने उसे घेर लिया। उसी वक्त उसके साथी भी सहायताको आपहुंचे। दोनों ओरसे घोर संग्राम होने लगा। हालिडे पैदलही, विलक्षण वीरता दिखाने लगा। वालेस घोड़े पर चढ़ा हाथमें बर्छा लिये शेरकी तरह शत्रुओंका मथन करने लगा। मानो चारोंओर मौत फैलाने लगा। अन्तमें अङ्गरेज हताश और बलहीन होकर भाग चले। इस लड़ाईमें सेनापति के सिवा बीस अङ्गरेज मारे गये और बहुतसे घायल हुए। स्काटोंमेंसे एक भी नहीं मारा गया सिर्फ पांच आदमी जखमी हुए।

थ्रेल्हाक नामका एक अङ्गरेज सैनिक सर ह्यूके नीचे अफसर था। उसने मुट्ठी भर स्काटोंके सामने पीठ दिखानेवाले अङ्गरेजोंको धिक्कार देकर तोनसौ सेना लेकर आक्रमण किया। वालेस और उसके सब साथी अब घोड़ों पर सवार थे। वह लोग धीरे धीरे शत्रुओंको एक तंग दर्रेमें लेगये। वालेसने इतनी थोड़ी सेना लेकर इतनी बड़ी सेनाके सामने खुले मैदानमें उतरनेका साहस नहीं किया इसीलिये हिकमतसे उसे तंग जगहमें लेगया। वह जानता

था कि इस तंग जगहमें संख्या ज्यादा होनेसे कुछ मुआका नहीं है। अङ्गरेज अपनी भूल समझकर पीछे हटे। वालेसने उनका पीछा करनेकी हिम्मत न की।

इसी हालतमें दोनों पक्षकी सेना पड़ी है इतनेमें वालेसके प्यारे मित्र ग्रेहम और कर्कपेट्रिक सेना सहित वालेसको ढूंढ़ते हुए वहां आपहुंचे। ग्रेहमके साथ तीस और कर्कपेट्रिकके साथ पचास चुने हुए योद्धा थे। दूरसे मित्रोंकी सेना देखकर वालेसने आक्रमणका इरादा किया। उसका जो इरादा था वही काम था। भयानक शेरकी तरह अङ्गरेजी सेना पर टूट पड़ा। दैवीशक्तिसम्पन्न स्वजाति प्रेमी वीरदलका बेग किसकी ताकत है जो बरदाश्त कर सके? पलक भरमें अंगरेज सैनिकोंकी लाशोंसे मैदान भर गया। यह बिजलीकासा तेज अङ्गरेजोंसे बरदाश्त न होसका। वह पीठ दिखाकर भागी। सेनापति ग्रेस्टाक सौ सिपाहियोंके घेरेमें घोड़ेपर सवार होकर भागा। किन्तु उसके सामने ग्रेहम और कार्कपेट्रिक चले आये। उधर वालेसने उसका पीछा किया। उसने दूरसे ग्रेहमको देखकर ग्रेस्टाक पर आक्रमण करनेका चिल्लाकर हुक्म दिया। ग्रेहम ने झट अङ्गरेज सेनापतिके पास पहुंचकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। सेनापतिके मारे जाने पर अङ्गरेजी सेना भयसे इधर उधर भागी। कितनेही सिपाही पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथ मारे गये। खबर पहुंचानेके लिये बहुत थोड़े आदमी जीते बचे। जो बचे उन्होंने भागते भागते अङ्गरेजी खेमेमें पहुंचकरही दमलिया।

युद्ध समाप्त होजाने पर विजयी स्काट सेनानायक परस्पर मिले। आज उनके आनन्दकी सीमा नहीं है। बहुत दिनके बाद मुलाकात हुई है फिर ऐसी विजयके साथ। सोनेमें सुगन्ध है। लड़ाईमें कड़ी आवाजसे हुक्म देनेके लिये वालेसने स्वाभाविक उदारतावश ग्रेहमसे क्षमा मांगी।

इधर सूर्य्यदेव अस्ताचलको पहुंचे और रातरानी धीरे धीरे आकाशमें आई। सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिये।

वालेसने उसी रातको लाकमिबेन किले पर आक्रमण करनेका इरादा जाहिर किया। कहा—लड़ाईमें जितनी सेना मारी गई है उससे मालूम होता है कि किलेकी रक्षाके लिये बहुत थोड़ेही आदमी हैं। सबने उसके इस इरादेका अनुमोदन किया और फौरन उसके अनुसार काम किया गया। उसी कालीरातको उस वीरदलने लकमिबेन किलेकी तरफ कूच किया। टाम हालिडे उस प्रदेशसे ज्यादा वाकिफ था इस लिये वही उस दलका पथप्रदर्शक बना। हालिडे के प्रधान सहचरोंमेंसे वाटसनको कुछ दिन उस किलेमें रहना पड़ा था। उसकी किलेके सब लोगोंसे मुलाकात बात थी। वह अकेले आगे आकर दरवाजे पर खड़ा हुआ। दुर्गद्वाररक्षकने पूछा—"वाटसन! क्या खबर है?" वाटसनने कहा—"सेनापति स्वयं आरहे हैं शीघ्र द्वार खोल दीजिये।" बिना कुछ सोचे विचारे उसने उसके कहनेसे दरवाजा खोलदिया। हालिडेउसके पीछे छिपा था। रक्षक ने ज्योंही दरवाजा खोला हालिडेकी तलवारने उसे काट डाला। उसके हाथमें चाबियोंका गुच्छा था, वाटसन उसे लेकर आगे आगे चलने लगा और हालिडे तथा दूसरे लोग उसके पीछे पीछे। किसीने उन्हें नहीं रोका। किलेमें ऐसा कोई था ही नहीं जो उन को रोकता। सिर्फ दो नौकर और कई स्त्रियां थीं। इसलिये वह लोग बेधड़क चारों ओर घूमने लगे मानो वही किलेके मालिक थे। किला देखभाल कर सब भूख प्याससे विकल होगये थे, लड़ाईमें गये हुए अङ्गरेजोंके लिये जो खानपानका सरञ्जाम रखा था उससे अपनी भूख प्यास बुझाने लगे, केवल वाटसन दरवाजे पर पहरा देने लगा। इतनेमें मैदानसे भागी हुई अङ्गरेजी सेना आकर दरवाजे पर खड़ी हुई। उन लोगोंको जरा खबर न थी कि किला दुश्मनोंके हाथ आगया है। इस लिये उन्होंने बेखटके भीतर घुसना चाहा। वाटसनने कुछ रोकटोक न की। वह लोग ज्योंही भीतर पहुंचे विजयी स्काटसेनाने सबका काम तमाम कर दिया। एक भी योधा न बचा।

दूसरे दिन तड़के स्काटिश सरदार, वाटसनके हाथमें किलेका

भार और अङ्गरेज औरतोंको स्वदेश चले जानेका हुक्म देकर कर्झोड की तरफ रवाना हुए। उस दिन वहां रहकर दूसरे दिन नहाने खानेके बाद क्राफोर्ड मूरकी तरफ कूच कर गयी। यहां आकर वह कई दल होगयी। टाम हालिडे कर्हल किलेको लौट गया। अङ्गरेजोंको मालूम नहीं हुआ कि वह इस लड़ाईमें शामिल था। वह बेखटके वहां रहने लगा। कार्कपेट्रिक एस्कडेल बनमें जारहा यहां अङ्गरेजोंसे उसको कुछ डर न था।

वालेस और ग्रैहम चालीस साथियों सहित क्राफोर्ड किलेको रवाना हुए। वालेस उसी रातको उस किलेपर आक्रमण करना चाहता था। इस समय मार्टिण्डल नामका एक कम्बरलेण्ड निवासी अङ्गरेज किलेका अफसर था। वालेस पासकी क्लाइड नदीके किनारे सब सेना छोड़ एडवर्ड लीटल नामके सिर्फ एक साथीको लेकर शहरमें पैठा। एक होटलके पास जाकर उसने एक स्काट स्त्रीसे सुना कि इस समय अङ्गरेजसेना उसी होटलमें खापीकर मस्त हो रही है। स्त्रीने कहा—"अगर तुम स्काट हो तो जल्द भागो, क्यों कि वह लोग वालेस नामके एक स्काट और उसके लाकमेबेन किला लेलेनेकी चर्चा करते थे; इसलिये उधरसे होकर जाना तुम्हारे लिये खतरेसे खाली नहीं है।" वालेसने स्त्रीको अपना सच्चा हित चाहनेवाली समझा किन्तु उसकी सलाहके बखिलाफ काम करनेपर मुस्तैद हुआ। वीरहृदय वालेसने उसी वक्त होटलमें अङ्गरेजी सेना पर हमला करनेका विचार किया। दूरसे ग्रैहमको किलेमें घुसने का इशारा करके आप होटलमें गया। एडवर्ड लीटल दरवाजे पर रहा। मकानके अन्दर पहुंचकर उसने व्यंग करके कहा—"मैं आशीर्वाद करता हूं आप लोगोंका भला हो।" अङ्गरेज सेनापतिने उस को स्काट समझकर पूछा—"तुम कौन हो जी! किस साहससे यहां तक चले आये?" सेनापतिका सवाल पूरा भी न होने पाया था कि वालेसकी नङ्गी तलवारने बदमस्त अङ्गरेजों पर उसका इरादा प्रगट करदिया। वह लोग कुछदेर भौचक्केसे होरहे। शरावने

उनके होश हवास वेठिकाने कर दिये थे। वालेसने सबको मार डाला। हाररचक लौटलने भी पांच सिर गिराये। इधर ग्रेहम वालेसकी आज्ञानुसार किलेके दरवाजे पर पहुंचा। किवाड़ बन्द देखकर उसने उसमें आग लगा दी। अग्निलीला देखकर वालेस उधर दौड़ा। देखतेही देखते किवाड़ जलकर भस्म होगया वह लोग भीतर घुसे। वहां सिर्फ कई औरतें थीं इस लिये यह लोग चारोंओर घूमने लगे। खानेकी कोई चीज न मिली। पीछे उन्होंने होटलसे खाना मँगाकर भूख बुझाई और रात वहीं बिताई। सवेरे औरतोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगाई और डनडफको कूच कर दिया। वह रात उन लोगोंने डनर्डफमें बड़े आनन्दसे बिताई।

---

## आठवां अध्याय।

हेमिङ्गटनकी उत्तराधिकारिणीसे वालेसका विवाह—अङ्गरेजोंसे घिरकर वालेसका कार्टलेन क्रेगसमें आश्रय लेना—हेसिलरीगके हाथसे उसकी षोड़ा पत्नीकी मृत्यु—वालेसकी प्रतिज्ञा—उसके हाथसे हेसिलरीगकी हत्या—बीगरका प्रसिद्ध युद्ध—वालेसका स्काटलैण्डका अभिभावक चुना जाना—के नदीके किनारेके किले और टरनबरी किले पर अधिकार—अंगरेजों से सन्धि—वालेसका कमर्णकनगर में निवास।

सन् १२९७ ईस्वीके मार्च महीनेमें वालेस डनडफसे गिलबैंकको रवाना हुआ। वसन्त ऋतु आई है। लतावली हरे हरे सुन्दर पत्तोंसे शोभायमान है चारों ओर चिड़ियोंकी मीठी तान उड़ रही है प्रकृति नई सजधजसे जगतका मन मोह रही है। ऐसे समयमें

किस प्रणयीका चित्त ठिकाने रह सकता है? वालेसका उदार-हृदय भी बसन्ती वायुसे प्रणयानलमें पिघलने लगा। इतने दिन लड़ाई भिड़ाईमें लगे रहनेसे प्रणयिनी स्त्रीका ख्याल नहीं रहा। किन्तु आज इस विश्रामागारमें वसन्तके झकोरेसे उस अनुपम रूपवती निराश्रया युवतीके लिये उसका मन्मतङ्ग मतवाला होगया। विरह सह न सका और उसके घर जापहुंचा। कई दिनके आवागमनसे और प्रणय-परिचय और सामरिकजीवनसे उचित अनुचित सम्बन्धके विषयमें अनेक तर्क वितर्क करनेके बाद वालेस उससे खुल्लमखुल्ला विवाह करनेको राजी हुआ। वालेसके प्रियमित्र पादरी ब्लेयरने इस विवाहकी पुरोहिताई की। नवीन दम्पतीने कुछ दिन आनन्दपूर्वक मधुचन्द्रिमा (Honey Moon) बिताई। कुछही दिन बाद युवती गर्भवती हुई और समय पाकर एक लड़की पैदा हुई।

इस प्रकार वालेस यद्यपि मनके सुखसे प्यारीके साथ रहने लगा तथापि उस सुखके समय भी देशकी दुर्गति याद करके उसे शोक होने लगा। जबतक अङ्गरेज स्काटलैण्डमें शासन करते हैं तबतक वालेसके चित्तको सच्चे सुखकी आशा कहां?

इसी सुख दुःखमें दिन बीत रहे हैं। इसी बीचमें एक दिन वालेस शहरके बाहरवाले गिरजेसे ईश्वरोपासना करके लौट रहा था। उसका प्यारा मित्र ग्रेहम साथ था। उन दोनोंके साथ कुल २७ आदमी थे। हेसिलरीग और सर राबर्टथार्न नामके एक नाइट ने राहमें उन पर जबरदस्त हमला किया। लेमिङ्गटनकी उत्तराधिकारिणीसे व्याह करके वालेस हेसिलरीगकी आंखोंका कांटा बनगया था। व्याहके दिनसेही हेसिलरीगने वालेसको मारडालनेकी प्रतिज्ञा की थी। इतने दिन मौका ढूंढ़ता था आज वह मौका मिल गयाहै।

हेसिलरीगका प्रधान सैनिक तानेतिश्नेसे वालेसको युद्धके लिये भड़काने लगा। वालेस ऐसे तानेतिश्ने सुनकर कभी एक पल भी देर नहीं करता था किन्तु आज वह राजनैतिक संन्यासी होकर भी आश्रमी है। स्त्री और लड़कीकी मायासे आज उसे प्राणका मोह

हुआ है। इसलिये उसने एक बएक जान पर खेलना नहीं चाहा। झगड़ा बचाने लगा। अटल अचलकी भांति चुपचाप छेड़छाड़ सहने लगा। किन्तु जब देखा कि अङ्गरेज सामने आरहे हैं तब देर करना उचित न समझकर यह लोग जबरदस्त शेरकी तरह उछलकर उन पर आटूटे। पल भरमें लाशों और रक्तकी धारासे रणभूमि डूब गई। किन्तु इतनी अङ्गरेज सेनाने आकर उन्हें घेर लिया कि पचास अङ्गरेजोंको जमीन पर सुलाकर और व्यूह तोड़कर उन्हें मैदानसे भागना पड़ा। वालेस दलबल सहित प्यारीके घरकी तरफ दौड़ा। अंगरेजोंने पीछा किया। वालेस की पत्नीने पति और उसके साथियोंकी विपद देखकर सिंहद्वार खोल देनेका हुक्म दिया। स्काटलोग उस रास्तेसे भीतर चले गये। जबतक सब स्काट सेना खिड़कीकी राह किसी बेखतर जगहमें न पहुंची तबतक वालेस और ग्रेहम बहुत बीरतासे सिंहद्वारकी रक्षा करते रहे। इधर स्काट कार्टलेनक्रेग नामकी गुफामें जाछिपे। यह गुफा अब भी "वालेस गुफा" कहलाती है। साथियोंके निरापद स्थानमें पहुंच जानेकी खबर पाकर वालेस और ग्रेहम सिंहद्वार छोड़कर उधरही चले।

प्रणय स्त्रीको देवी बना देता है। प्रणय उसे अपना स्वार्थ भूल जानेकी शिक्षा देता है। पतिके ऊपर आपत्त देखकर अपने भविष्य का विचार न करके वालेसकी पत्नीने अपने महलका सिंहद्वार खोल दिया। पति और उसके साथियोंको खिड़कीसे भाग कर जान बचानेकी सलाह दी। स्वदेशका उद्धार करके प्राणसे भी प्यारी स्त्रीको सुख देनेकी आशासे आज वालेसने पत्नीकी सलाह मान ली। उन लोगोंके चले जाने पर प्यारीकी क्या गति होगी वह इस बातको ख्यालमें नहीं लाया। वह स्वयं शत्रुओंकी स्त्रियोंसे जैसा सुलूक करता था शायद समझा था कि अंगरेज सेनापति भी उसकी स्त्रीसे वैसाही सुलूक करेंगे। किन्तु उसकी यह आशा दुराशा मात्र हुई। सती पतिका प्राण बचानेके अपराधमें

अङ्गरेज सेनापतिकी आज्ञासे पकड़ीगई और उसीवक्त तलवारसेकाट डाली गई। वालेससे नाता तोड़कर सतीने प्राणत्याग तो किया किन्तु उसके आत्मोत्सर्गका चमकताहुआ दृष्टान्त सदाके लिये स्काट-स्त्रियोंको आदर्श बन गया।

पत्नीके मारे जानेकी खबर उसकी लाश दाईने वालेस तक पहुं-चाई। इस शोचनीय समाचारसे उसके, उसके प्रियमित्र ग्रेहम और दूसरे स्काटोंके शोककी सीमा न रही। वालेसका हृदय यद्यपि शोकसे विह्वल होगया था तथापि वह वीरोचित धैर्य्यसे शोक सम्हालकर रोतेहुए प्रियमित्र और दूसरे साथियोंको इस तरह उत्ते-जित करने लगा—

"वीरो! शोक छोड़ो। इस शोकसे अब कुछ फायदा नहीं है, तुम लोग रोकरके अब उसे जिला नहीं सकोगे (यह कहते कहते उसकी आंखोंसे आंसुओंकीझड़ी लगगई) भाइयो! प्रतिज्ञाकरो कि जबतक इस शोचनीय हत्याका बदला न लोगे तबतक न सोओगे; और मैं आज ईश्वरको साक्षी करके तुम्हारे सामने प्रतिज्ञा करता हूं कि इस शोचनीय स्त्रीवधका पूरा बदला लूंगा, मेरी यह तलवार अङ्गरेजोंके बूढ़े बच्चे स्त्री किसीको यहांतक कि पादरियोंको भी क्षमा नहीं करेगी; प्यारे भाइयो! मेरी प्रार्थना यही है कि अगर मैं मरूं तो मेरी यह प्रतिज्ञा तुम लोग पालन करना, भाई सर जॉन! शोक छोड़ो। अब शोकका समय नहीं है, चलो हम लोग दस हजार अङ्गरेजोंके खूनसे प्यारीकी शोकाग्नि बुझावें। कायर पुरुषही आंसूसे शोक मिटाते हैं, आंसूसे वीरका साहस घट जाता है। अपकारका बदला लेनेके लिये हृदयको उभाड़नेवाला जो क्रोध है वह आंसूके जलमें धुल जाता है।"

सेनापतिकी इस जोशदार बातसे सब स्काटोंका खून गर्म हो गया। सबने एक स्वरसे प्रतिज्ञा की कि खूनके बदले खून करके शोककी आग बुझावेंगे। चाचा अर्चिंगलेक वालेसकी यह दुर्वार्त्ता सुनकर दलबल संहित कार्टलेन वनमें उससे आमिला।

समूचा वीरदल बदला लेनेकी इच्छासे मत्त होकर रातको लानार्क की तरफ रवाना हुआ। अंगरेजोंको उनके आक्रमणका शक न था वह बेफिक्र सोते थे। शहरमें जाकर उस दलके दो टुकड़े हुए। एक टुकड़ेको लेकर वालेस हेसिलरीगके महलको चला और दूसरे को लेकर ग्रेहम सर राबर्ट थार्नको ढूँढ़ने लगा। शेरिफ हेसिल-रीग ऊंची अटारी पर बेखबर सो रहे थे इतनेमें वालेस उनके शय-नागारके दरवाजे पर पहुंचा। उसके लात मारनेसे दरवाजा टूट गया। झपाटेकी आवाजसे हेसिलरीगकी आंखें खुलीं। वह डरके मारे सीढ़ियोंकी तरफ भागना चाहते थे कि वालेसने उनका गला पकड़ लिया और तलवारसे काट डाला। अचिंगलेकका शक दूर नहीं हुआ उसने हेसिलरीगको अब भी जीता समझकर तलवार की नोक उनके बदनमें दोबार गड़ाई। हेसिलरीगका पुत्र पिताकी सहायताको दौड़ा पर वह भी पार हुआ। महलमें कुहराम पड़गया। रोनेकी आवाज सुनकर सड़कमें बहुत लोग जमा होगये। उधर ग्रेहमने सर राबर्टथार्नके मकानमें आग लगा दी वह उसीमें जलकर भस्म होगये। और भी कितनेही नगरनिवासी जल गये। वहांके बाशिन्दोंमें अधिकतर स्काट थे इसलिये वालेससे उनकी आपसे आप सहानुभूति हुई। सबने आकर वालेसका साथ दिया। सैकड़ों अङ्गरेज मारे गये। लानार्क पर स्काटोंका पूरा अधिकार होगया। जल्द यह खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। झुण्डके झुण्ड स्काट आकर वालेसके झण्डेके नीचे खड़े हुए। सबने एक वाक्यसे वालेस को सरदार और नेता माना। वालेसने अब अपने हृदयका भाव छिपा नहीं रखा, आज सबके सामने साफ कह दिया कि स्काटलेंड को अंगरेजोंकी गुलामीसे छुड़ानाही मेरे जीवनका एकमात्र व्रत है।

लानार्क विजयके बादही वालेसका नाम पहले पहल इतिहासमें आया। यहींसे जातीय ऐतिहासिक उसको समूचे जातीयदलका नेता मानने लगे। महात्मा शिवाजी जैसे पहले डाकू कहलाये थे उसी तरह वालेस भी पहले

डाकू बताया गया था। सच पूछिये तो मामूली आदमी महात्माओं के अलौकिक कार्य्योंका कारण समझनेमें असमर्थ होकर उनकी निन्दा किया करते हैं * हरेक समाज सुधारक, हरेक धर्म्मसुधारक और हरेक राजनीतिक संन्यासीका जीवन ऐसीही अनुचित निन्दा के तीरोंसे जखमी हुआ करता है। वह लोग जिनका दुःख दूर करनेके लिये अपना सुख छोड़ देते हैं अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं वही उनके उद्देश्य पर सन्देह करते हैं और हर तरहसे उनके काममें विघ्न डालते हैं। खासकर राजनीतिक संन्यासीकी जिन्दगी बड़े खतरेमें होती है। वह शत्रु, मित्र, स्वजाति विजाति सबसे सताये जाते हैं। जबतक सफलकाम न हों तबतक वह शत्रुओंके सामने बागी और स्वजातिके सामने अशान्ति फैलानेवाले डाकू हैं। अगर सफलमनोरथ हुए बिना वह मरजायं या यह काम छोड़ दें तो इतिहासमें उनका ऐसाही चित्र खींचा जाता है। सफल मनोरथ होने पर वह स्वदेश और स्वजातिके उपास्यदेवता और विपक्षी—विजातिके लिये भय और विस्मय उपजानेवाले होते हैं। वालेस सानार्ककी इस विजयके बाद स्वदेश और स्वजातिका आराध्यदेवता और अंगरेजोंको भय और विस्मय उपजानेवाला होगया। अंगरेजों ने पहलेहीसे उसकी अद्भुत वीरताका बहुत कुछ परिचय पाया था किन्तु तब उसे राजनीतिक प्रतिद्वन्दी नहीं समझा था। आज चारों ओरसे अनगिनत आदमी खुल्लमखुल्ला आकर उसके झण्डेके नीचे खड़े होते हैं, आज स्काटलेंडवालोंने खुल्लमखुल्ला उस को नेता बनाया है। आज उसने सबके सामने अंगरेजोंकी जड़ काटना अपने जीवनका एक मात्र व्रत कहकर घोषणा की है। यह सब सुनकर उन लोगोंकी आंखें खुलीं। वह समझ गये कि वालेस अब बागी या डाकू नहीं है, स्काटलेंडवालोंका प्रतिनिधि, स्काटप्रजातन्त्रका सभापति और अंगरेजोंका प्रतिद्वन्दी है।

---

* अलोक सामान्य मचिन्त्य हेतुकम्।
द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्॥ (कुमारसम्भव)

स्काटलेण्डके भाग्याकाशमें इस तरह जो फेर बदल होरहा था उसकी खबर रथवेलके अध्यक्ष सर आमिर डी वालेसने एडवर्डके पास भेजी। यह आदमी स्काटलेण्डका होकर भी जातीय स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें बेचनेकी कल बन गया था। इस जातीय विश्वासघातके इनाममें एडवर्डने रथवेलके असली अध्यक्ष मरेको हटाकर उसकी जगह इसको बिठाया। इसीकी चिट्ठीसे एडवर्डको सबसे पहले यह मालूम हुआ कि स्काट लोग स्वदेशको अंगरेजोंकी बेड़ीसे छुड़ाने पर मुस्तैद हैं। एडवर्ड स्काटलेण्डको फिर कब्जेमें करनेके लिये बड़ी भारी सेना लेकर उधर रवाना हुए। उनकी छावनीमें रिकार्टनवासी जाप नामका एक काला स्काट था। अंगरेज उसे ग्रिमस्वीके नामसे पुकारते थे। यह वालेसका नाम और गुणावली सुनकर उसकी खोजमें निकला। खोजते खोजते काइलें प्रदेशमें जापहुंचा। वहां स्काटिश अधिनायकसे भेंट हुई। वालेस सेना जमा करनेके इरादेसे वहां गया था। उसने जापकी जबानी इङ्गलेण्डकी भीतरी हालत और एडवर्डकी इच्छा मालूम की। कार्य्यदक्षता और विश्वासकी खातिरसे इस आदमीको स्काटोंने स्काटलेण्डका अस्त्रधारक बनाया।

आयरशायरसे लौटकर वालेसने झटपट सेना इकट्ठी की। उसने पहलेका कुसूर माफ करके कैदियोंको रिहाई दी। वही लोग उसकी सेनामें विशेष करके थे। उसके चाचा सर रेनाल्डसे अंगरेजोंकी जो सन्धि हुई थी उसका समय बीत गया है। तोभी अंगरेजोंने उनकी जायदाद इस लिये जब्त कर रखी कि वह स्वयं खुल्लमखुल्ला लड़ाईमें अंगरेजोंके मुकाबले खड़े न हों। इससे वह खुल्लमखुल्ला तो वालेसका साथ न दे सके मगर छिपे छिपे उसे धन और जनसे बहुत कुछ सहायता देने लगे। इधर कनिंहम और काइलके एडम वालेस और रावर्ट वायड एक हजार हथियारबन्द पुरुषों सहित लानार्कमें आकर वालेसके झण्डेके नीचे खड़े हुए। सर जान ग्रेहम और उसका चुनाहुआ रिसाला और दूसरे बहुतसे

स्काट देशभक्त वालेससे आमिले। सब मिलाकर कोई तीन हजार सवार और असंख्य पैदल सेना जातीय पताकाके नीचे आजमी। सेनाकी संख्या तो बहुत बढ़ गई किन्तु उसमें अधिकतर सिपाही अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित न थे इससे मौके पर इस अधिकतासे उतना फायदा नहीं हुआ।

इधर इङ्गलेण्डनरेश एडवर्ड या उनके प्रतिनिधि साठ हजार सुसज्जित सेना लेकर लंकाशायरके वीगर नामक गांव तक आपहुंचे। वहांसे उन्होंने दो दूतों सहित अपने भानजे फोऊको वालेसके पास भेजकर यह कहलाया कि अगर वालेस अपने पिछले अपराधोंके लिये अब भी क्षमा मांगले तो उसे क्षमा कीजायगी और बहुत कुछ इनाम दिया जायगा। नहीं तो वह राजविद्रोही समझा जायगा और गिरफतार करके फांसी पर लटकाया जायगा। वालेसने बड़ी नफरत दिखाकर चिट्ठीमें इसका जवाब दिया और अपनी शक्ति दिखानेके लिये दोनों दूतों और भानजेको मार डाला!

वालेस एडवर्डकी सेनाका अन्दाजा करनेकी गरजसे रातको बिना किसीसे कुछ कहे भेष बदलकर उनकी छावनीमें घुस गया। सर जान टिन्टो सिर्फ थोड़ी दूर तक उसके साथ गया था। सिर्फ उसीको वालेसकी बात मालूम थी। वालेस अंगरेज सैनिकों की बहुत कुछ छेड़छाड़ सहकर छावनीकी हालत देखकर जल्द भाग आया। जल्द नहीं भागता तो वह जरूर पकड़ा जाता। क्योंकि कोई कोई उसे वालेस समझकर कानाफूसी करने लगे थे। इधर जल्द न आनेसे स्काटिश छावनीमें भी आफत थी। सर जान ग्रेहम बहुत देरसे वालेसको न देखकर घबराया। उसे टिन्टो पर विश्वासघातका सन्देह हुआ। वह उसके हाथ पैर बांधकर जलाने या फांसी पर लटकानेका हुक्म देनाही चाहता था कि इतनेमें वालेस आपहुंचा। उसने फौरन टिन्टोकी रस्सी खोल डालनेका हुक्म देकर अपने गायब होनेका कारण बताया। ग्रेहम इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने कहा कि सेनापतिको ऐसे जानजोखोंके

काममें हाथ नहीं देना चाहिये। वालेसने उत्तर दिया कि स्काटलेण्डको शत्रुके पंजेसे छुड़ानेके लिये इससे भी बढ़कर भयंकर काम करना होगा।

एडवर्डकी छावनीसे लौटकर वालेसने सवेरे तक आराम किया। खूब तड़के समस्त जातीय सेना एडवर्डका मुकाबला करनेको तय्यार हुई। वालिस स्वयं वायड और अचिंगलेकके साथ रिसालेके आगे हुआ। जान ग्रेहम, एडम और समर्विल सहित बीचमें रहा। सर वालटर और उसका पुत्र डेविड तथा सर जान टिन्टो रिसालेके पीछे रहे। रिसालेके इन तीन स्तम्भोंके पीछे वालेसने पैदल सेना रखी और उसे हुक्म दिया कि तुम लोग जल्द मत लड़ने लगना। क्योंकि उनके पास न तो बढ़िया हथियार थे और न हारने पर भागनेके लिये सजेसजाये घोड़े। इसके बाद उसने सब सैनिकोंको सम्बोधन करके कहा कि जबतक रणमें विजयलक्ष्मी प्राप्त न हो तबतक कोई लूटपाट न मचावे।

इस तरह तय्यार होकर वह लोग एक मन और एक वाक्यसे धीरे धीरे अङ्गरेजी मोर्चेकी तरफ जाने लगे। राहमें टाम हालिडे दो पुत्रों सहित और जार्डन कार्कपेट्रिक तीन सौ सेना संहित आमिले। उनके अचानक आजानेसे स्काटिश सेनाके आनन्दकी सीमा न रही।

वालेस अङ्गरेजी छावनी अच्छी तरह देख आया था इस लिये जिधर इङ्गलेण्डनरेश या उनके प्रतिनिधिका खेमा था उसने अपनी सेना उधरही चलाई। मानो सुनसान कन्दरेमें जोर शोरका जलप्रपात आपड़ा। अङ्गरेजी सेनाको इतना खयाल न था कि यहां पर हमला होगा इससे वह तय्यार न थी। सो पहले तो बड़ीही गड़बड़ मची पीछे अङ्गरेजोंके धैर्य्यगुणसे उनकी छावनीमें फिर सिलसिला बंधा। पहली मुठभेड़ बड़ी भयानक हुई। अङ्गरेज-सेनानायक अर्ल आफ केन्ट पांच सौ सेना लेकर रातको घूमने गये थे, वह झटपट आकर शिविरकी रक्षाके लिये जीजानसे चेष्टा करने लगे। उधर ग्रे ईल प्रभृति स्काटिशसेना-नायक वालेसकी बगलमें आडटे।

बड़ी तेजीसे स्काटिश सवार और पैदल सेना अर्ल आफ केन्टकी तरफ दौड़ी। उक्त अर्ल अद्भुत वीरतासे राजाके चन्दोवेकी रक्षा करते थे। किन्तु वालेसकी तलवारने जल्दही उनकी देहके दो खण्ड कर दिये। सेनानायकके मारे जानेसे सब अङ्गरेजी सेना मैदान छोड़कर भागी। मैदानमें चार हजार और भागते वक्त सात हजार अङ्गरेजी सेना मारी गई। बीस हजार भाग गई। स्काटों ने कल्डर होप तक उसका पीछा किया। फिर सेनानायकके हुक्म से लौट आये।

इधर सूर्य्यदेव मध्याकाशमें आकर अपनी उज्वल किरणें बरसाने लगे। स्काटोंने लौटकर शत्रु शिविरमें जा तरह तरहकी चीजें खा पीकर विजयोत्सव मनाया। कुछ देर आराम करके वहां जो हीरे मोती वगैरह पाये सब लूट लिये। वालेसने ऐसे चौरस मैदानमें दूसरी बार अंगरेजी सेनाका मुकाबला करनेका साहस न करके और अंगरेजी सेनाके फिर लौटकर हमला करनेके सन्देहसे वहांसे चल देनेका विचार किया। उसने लूटका माल रोपिसबेग नामके स्थानमें गाड़कर डेविडसौंकी तरफ सेना चलाई। वहां दिन भर छिपा रहा।

स्काटोंके कल्डर होपसे लौट आने पर अंगरेज सेनापति अपनी बिखरी हुई सेना बटोरकर जान शीन स्थानमें विश्राम करने लगा। अपने बहुतसे सैनिकोंके मारे जानेसे उसको बड़ा भारी शोक हुआ। मारे गये वीरोंमें राजभ्राता, राजाके दो भानजे और अर्ल आफ केन्ट विशेष उल्लेख योग्य थे।

अङ्गरेजसेना यों उदास पड़ी है इतनेमें शीगरके शिविरसे दो अङ्गरेज बावर्चियोंने आकर खबर दी कि स्काटसेना वहां शराब वगैरह पी कर बदहवास पड़ी है, इस समय अङ्गरेज बातकी बातमें उसको खतम कर सकते हैं। सेनापतिने इस बात पर विश्वास नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि वालेसका सा बुद्धिमान सेनापति कभी स्काटसेनाको इस तरह दावमें नहीं आने देगा। तथापि

परीक्षाके लिये लांगकैसलके ड्यूकको दस हजार सेना लेकर बीगर जानेका हुकुम दिया। वेस्टमोरलेण्ड और फिकार्डीके जमींदार भी एक एक हजार घुड़सवार लेकर उनके पीछे चले। राफवेम वारविक, सर राल्फ ग्रे, आयमके डिवालेन्स प्रभृति भी अपनी अपनी फौज लेकर ड्यूकके साथ हुए। यह समूची अङ्गरेज सेना जब बीगरके मैदानमें पहुंची तो सामने सिर्फ अङ्गरेजोंकी लाशें देखीं, स्काट एक भी न देखा। किन्तु तुरन्तही स्काटसेनाका गुप्त स्थान मालूम होगया। अङ्गरेजोंके आनेकी खबर पातेही वालेस समस्त जातीय सेनासहित रोपिश नामक एक दलदलके किनारे आया। अपने घोड़े पीछे रखकर घुड़सवार, पैदलसेनाके शामिल कतारबन्द होकर दलदलके किनारे खड़े हुए। अङ्गरेजी रिसाला और पैदल सेना दलदलके दूसरे किनारे थी। अपने सेनापतिके हुक्मसे अङ्गरेजी रिसाला दलदलमें चला। ज्योंही आगे बढ़ा त्योंही घोड़ोंके पैर कीचड़में ऐसे फंस गये कि निकल न सकें। स्काटसेना आक्रमणकी बाट देखती थी अब शेरकी तरह उछलकर दलदलमें फंसे शत्रुओं पर टूट पड़ी। एक एक करके सब अङ्गरेज स्काट वीरोंकी तलवारोंसे मारे गये। पिकार्डीका जमींदार सर ग्रे हमके हाथसे और ड्यूक आफ वेस्टमोरलेण्ड वालेसके हाथसे मारे गये। दोनों सेनापतियोंके मारे जानेसे बाकी अङ्गरेज सेना इधर उधर भागने लगी। उसके मुंहसे इस दूसरी हारका समाचार सुनकर अङ्गरेज सेनापति बड़ाही शोकाकुल हुआ और साल्वे पार होकर इङ्गलेण्ड चला गया।

विजयलक्ष्मी प्राप्त करके वालेसने कार्कनमें एक महती जातीय सभा की। उस सभामें वह एक स्वरसे जातीय अभिभावक बनाया गया। सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।

इसकेबादही वालेसने दक्षिणस्काटलेण्डकी यात्राकी। वहांके अङ्गरेज कप्तान और शेरिफोंको निकालकर उनकी जगह स्काच कप्तान और शेरिफ बहाल किये। बीगरकी अद्भुत विजय बिना यह रद्दोबदल सहजमें न होने पाता।

इस विजयके बाद स्काटलेण्डके पहाड़ी किले एक एक करके वालेसके हस्तगत होने लगे। क्री नदीके किनारे एक बड़ी चट्टान पर क्रगलटन केसल नामका एक किला था। क्री नदीसे सागरका संगम होनेसे तिकोनी भूमि पर यह किला बना था। इसकी रक्षा के लिये ६० अङ्गरेज चौकीदार थे। उसके अन्दर जानेका सिर्फ एक रास्ता था। वालेस सब सेना नीचे छोड़कर सिर्फ दो आदमियों सहित दरवाजे पर आया। चौकीदार बेखबर थे शत्रुओंके अचानक आजानेसे भौचक्के रह गये। वालेसकी जबरदस्त ठोकरसे दरवाजा खुल गया। दरवान, प्रहरी सब एक करके तलवारके शिकार हुए। ६० अङ्गरेज मारे गये। खबर देनेके लिये सिर्फ एक बूढ़ा पादरी और दो औरतें रह गईं। जितने दिन किलेकी रसद न निबटी उतने दिन वालेस सेना सहित वहां रहा। रसद खतम होजाने पर किलेका दरवाजा तोड़कर चला गया।

इसके बाद उन लोगोंने क्रारिक किलेको कूच किया। किलेदार उस वक्त किलेमें मौजूद न था। स्काटोंने दरवाजेमें आग लगा दी। भीतर सिर्फ एक पादरी और कई औरतें थीं उन्होंने फौरन वालेस को किला सौंप दिया। वालेस किलेका माल असबाब लूटकर दूसरे दिन कमनककी गया। वहांसे लानार्क पहुंचा। यहां उसने विचारासन पर बैठकर दुष्कर्मियोंको दण्ड दिया। अपने भाईको पुत्रको जायदादका मालिक बनाकर वालेस ब्लैकक्राग किलेकी तरफ चला गया। वहां सेना सहित तीन महीने किलेमें आराम किया।

अब सब दक्षिणी स्काटलेण्ड और गालवे वालेसकी अमलदारी में आगया है। इंगलेण्डकी मातहतीमें यद्यपि पर्सी औयरमें, आमिर डी वालेंस रथवेलमें और विशपवेक ग्लासगोमें अब भी हुकूमत करते थे किन्तु एडवर्डकी अमलदारी बड़ी विपदमें देखकर लाचार उन्हें वालेससे कुछ दिनके लिये सन्धि की प्रार्थना करना पड़ी थी। इंगलेंडके प्रधानमन्त्री अर्ल आफ् स्टाफोर्ड राजप्रतिनिधि होकर स्काटलेण्डमें आये। सर आमिर डी वालेंसने वालेससे उनका परिचय

कराया। स्काटलेण्डका शत्रु समझकर वालेसने उन्हें नमस्कार नहीं किया और बिना शिष्टाचार किये एकबारही उनके आनेका कारण पूछा। प्रधानमन्त्रीने उत्तर दिया—"इंगलेण्डके महाराजने इस वक्त कुछ दिनके लिये सन्धि करनेके इरादेसे मुझे आपके पास भेजा है। आपका क्या इरादा है?"

वालेसको अङ्गरेजोंका बहुत विश्वास न था, तथापि उसने लाचार होकर सन्धि करना स्वीकार किया। सन्धि हुई कि एक वर्षतक इंगलेंड और स्काटलेण्डमें कोई झगड़ा न होगा। सन्धिकेदिन जो स्थान जिसके दखलमें है वह उसीके दखलमें रहेगा। १२८७ ईस्वीके फरवरी महीनेमें यह सन्धिपत्र लिखा गया और दोनों तरफसे सही की गई। इस सन्धिके बाद वालेस कमनक किलेमें जाकर रहने लगा। अङ्गरेजोंकी बातों और कामों पर उसे बहुत विश्वास न था इसलिये उसे बहुत बेखबरीमें रहनेका साहस न हुआ।

सन् १२८७ ईस्वीसे पहले वालेसका नाम इतिहासमें नहीं आया था। स्वदेशके लिये जीवन समर्पण करके लगातार अङ्गरेजोंसे लड़ते भिड़ते रहने और कदम कदम पर विजयलक्ष्मी प्राप्त करनेसे बहुत जल्द उसका नाम समस्त स्काटलेण्डमें मशहूर होगया। बीगरकी लड़ाई जीतने पर वह स्काटलेण्डका रक्षक माना गया। इंगलेण्डके महाराज गर्वित एडवर्डको भी उससे सन्धि करनी पड़ी। किन्तु इस छोटीसी विजयसे उसका चित्त फूलकर कुप्पा होनेवाला नहीं था। वह स्काटलेण्डको एक दम स्वाधीन बनाना चाहता था इसलिये एक अङ्गरेजका चरण भी स्काटलेण्डकी छाती पर रहते उसे विश्रामकी आशा कहां?

# नवां अध्याय।

## वालेसका स्वप्न—अङ्गरेजोंका विश्वासघात और आयर बारिकका हत्याकाण्ड।

वालेसने जो आशंका की थी वही हुई। अङ्गरेजोंके विश्वासघातके लक्षण बहुत जल्द मालूम होगये। अप्रैल महीनेके आरम्भमेंही एडवर्डने कारलाइलमें एक सभाकी। इस सभामें सब अङ्गरेज सेनापति बुलाये गये। विश्वासघातक आमेर डि वालेंसके सिवा और कोई स्काट नहीं बुलाया गया। इस सभामें यह बात तै हुई कि १२८० ई०की १८वीं जूनको आयरनगरके बारिकमें एक महती सभाका अधिवेशन होगा। सब बड़े आदमियोंको उसमें आनेके लिये न्यौता दिया गया। आयरके गवर्नर पर्सी साजिशकी बात पहलेहीसे जानते थे इसलिये उन्होंने यह कहकर वहां जानेसे अस्वीकार किया कि मैं इस विश्वासघातका अनुमोदन नहीं करूंगा। इससे एडवर्डने उनको बरखास्त करके अरनुल्फको उस पद पर नियत किया। जिससे वालेस किसी तरह न बचने पावे इसके लिये उसी तारीखको ग्लासगोमें भी एक सभा हुई।

स्काट लोग यह देखकर विस्मित हुए कि अङ्गरेज सन्धिका समय पूरा हुए बिनाही ऐसा आन्दोलन क्यों कर रहे हैं।

स्काटलेण्डके खान्दानी शेरिफ सर रेनाल्डने आयरकी सभासे पहलेही मंकटनकार्कमें जातीय दलकी एक सभा की। वालेस इस सभामें आया था।

इस समय वालेसके एक अजीब स्वप्नकी बात कही जाती है। कहते हैं कि उस मंकटनकार्कमें पहुंचनेसे पहले वालेस रास्तेकी थकावटसे कहीं सोगया। उसने सोते समय एक अद्भुत स्वप्न देखा। देखा—एक बूढ़ेने आकर उसका हाथ पकड़कर कहा—'पुत्र! यह लो तुम्हारे लिये विशाल शत्रु संहारिणी असि लेआया हूं—

इसे लो।' तलवारकी चमकसे दसोदिशाएं प्रकाशमान हो गईं। वह बूढ़ा वालेसको एक पर्वतकी घाटीमें लेजाकर अन्तर्धान होगया। वालेसकी आंखोंने बहुत दूर तक उसका पीछा किया फिर थक गई। वालेस उसका विशेष हाल जाननेके लिये व्याकुल हुआ। उसने देखा कि सामने कुछही दूर पर मेघमालासे एक बड़ा भारी अङ्गारा निकलकर रासमे सालवे सेण्ड तक समस्त स्काटलेण्डमें फैल गया। उसी अग्निकुण्डसे एक स्वर्णमयी देवीका आविर्भाव हुआ। देवीकी देहकी आभासे दसोदिशाएं चमक उठीं। यहांतक कि भगवान् सूर्य्यदेव भी मलिन होगये। देवी-मूर्ति धीरे धीरे वालेसकी तरफ उतरने लगी। उसने वालेसके पास आकर कहा—"वत्स! यह लाल हरा दण्ड ग्रहण करो, ईश्वरने निपीड़ित जातिका उद्धार करनेके लिये तुमको अधिनायक बनाया है। हृदय में साहस करके उसका यह बड़ा काम पूरा करो। इस पृथिवीमें तुम्हें पुरस्कारकी आशा बहुत कम है किन्तु वैजयन्ती-धाममें तुम्हारे लिये सिंहासन तय्यार है।" यह कहकर देवी वालेसके हाथमें एक पुस्तक देकर जिस मेघमालासे निकली थी एकबएक आकाश की ओर जाकर उसीमें मिल गई। स्वप्नमें वालेसने पुस्तक खोल कर देखा कि उसका पहला भाग जस्तेके अक्षरोंसे, दूसरा सोनेसे और तीसरा चांदी के अक्षरों से लिखा है। लिखा हुआ पढ़नेकी चेष्टा करनेमें वालेसकी नींद टूटगई। वह झट बेंचसे उठकर गिर्जेसे बाहर आया और पादरीसे स्वप्नका पूरा हाल कह सुनाया। पादरीने यथाशक्ति उसका मतलब निकालनेकी कोशिश की। कहा—"महात्मा सेंटएण्ड्रूने तुम्हें यह तलवार दी है। जिस पहाड़के पास वह तुम्हें ले गये वह अत्याचारोंका तूदा था तुम्हें इन अत्याचारोंका बदला लेनेका इशारा किया है। वह आग स्काटलेण्डके अशुभकी सूचना है। वह देवी स्वयं कुमारी मेरी हैं। इस दण्डसे तुम्हें स्काटलेण्डका शासन और शत्रुका दमन करना होगा दण्डके लाल रंगसे युद्ध और खन-खराबी जाहिर होती है वह तीन भागोंमें बटी हुई पुस्तक तुम्हारे

खण्ड खण्ड हुए देशकी सूचना करती है। देवीने यह पुस्तक तुम्हारे हाथमें देकर इस छिन्न भिन्न देशको एक करके उसका उद्धार करने का भार तुम्हारे कन्धे पर दिया है। जस्तेका अक्षर अत्याचारका स्वर्णाक्षर इज्जत और अत्याचारका और चांदीका अक्षर पवित्र जीवन और स्वर्गीय सुखका सूचक है।" इस स्वप्नसे वालेसको बड़ी चिन्ता हुई।

वालेसने मकन्टन गिर्जेसे चाचा सहित कारसबीकी यात्रा की। वहां रात बिताकर दूसरे दिन सवेरे आयर नगरको रवाना हुआ। वहलोग घोड़े पर सवार होकर किङ्गस केस अस्पताल तक गये थे कि इतनेमें सन्धिपत्रकी बात वालेसको याद आई। अङ्गरेजों पर विश्वास नहीं था इसीसे उसने सन्धिपत्रको अपने पास रखना उचित समझा था वह कारसबीमें एक बड़ेही गुप्तस्थानमें रखा था। वालेस और उसके चाचा सर रेनाल्डके सिवा और किसीको उस का पता मालूम न था इसलिये वालेसने खुद तीन सहचरों सहित कारसबीको कूचकिया। सर रेनाल्डके मनमें अशुभकी कुछ आशङ्का न हुई। इससे उन्होंने वालेसकी इन्तजारी न करके अकेले आयर की सभाके लिये कूच किया आयरमें एडवर्डकी सेनाके आरामके लिये एक छावनी बनाई गई थी। उसीमें सभाका अधिवेशन हुआ। सररेनाल्ड सबसे पहले सभामेंपहुंचे। अंगरेजोंने उनकेलिये एकफन्दा लगा रखाथा। सररेनाल्ड ज्योंहीं पहुचे त्योंहीं एकरस्सी उनके गलेमें फंस गई और वह लकड़ीपर झूलने लगे। एक एक करके ब्रूयर सर नील मान्टगोमरी वगैरहकी भी यही दशा हुई। वालेसके परम मित्र क्राफोर्ड, केम्बल, बायड, बार्क्ले, ष्टुआर्ट वगैरहने इसी पैशाचिक जालमें फंसकर प्राण गंवाये। इस दुर्दिनमें स्काटलेण्ड के करीब चारसौ वीर बिना लड़ाई कुत्ते गीदड़की तरह मारे गये। इस शोचनीय हत्याकाण्डका वर्णन करनेसे जी कांपता है आंखोंमें आंसू सूख जाते हैं। सभा करनेवालोंने इससे भी सन्तुष्ट न होकर उन वीरोंकी नंगी लाशें इधर उधर फेंकदीं।

राबर्ट बायड, सर रेनाल्डके पीछेही पीछे आये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालेसके बीस साथियों सहित एक होटलकी शरण ली। वालेसका एक और सहचर आयर्लेण्डका ष्टीफन् आयरकी सभामें जाता था राहमें वालेसके रिश्तेकी किसी औरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हाल उससे कहा। इसलिये वह भी उसी होटलमें जाकर बायडसे मिला और वहांसे सब लांगलन वनकी तरफ चल दिये।

इधर वालेस करसबीसे सन्धिपत्र लेकर आयरकी छावनीकी तरफ चला। रास्तेमें उसी स्त्रीसे भेट हुई। उसने उस भयंकर हत्याकाण्डकी बात उससे कही और उससे इसका बदलालेनेका अनुरोध किया। वालिस यह समाचार सुनकर हक्काबक्का और शोकाकुल हो गया। उसने एडमवालेस और विलियम क्राफोर्डके निकट यह खबर भेजनेका भार उस स्त्रीको देकर बायड और ष्टीफनसे मिलनेकेलिये लांगलनकी यात्रा की।

उधर उसको जबरदस्ती सभामें लानेके लिये सोलह अङ्गरेज सैनिक भेजे गये। राहमें वालेससे उनकी भेट हुई। वह वालेस को पहचानते नहीं थे। किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया। उसने और उसके साथियोंने क्षणभरमें दस अङ्गरेजोंको मार डाला। बाकी ६ जान लेकर भाग गये।

आयरके नये गवर्नर आरनुल्फने उस सभामें जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढ़ानेके लिये सबको नाइटका खिताब दिया। उस सभामें कोई ४ हजार अङ्गरेज जमा हुए थे। गवर्नरने वादा किया कि मृत स्काट्च बेरनोंकी जायदाद उन लोगोंमें बांट दी जायगी। समूची सभ्य मण्डलीके सम्वर्द्धनार्थ एक बड़ाभारी भोज हुआ। अङ्गरेज खान पानके रंगरेलसे मदमस्त होगये। वही विश्वासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लांगलनवनमें वालेसके पास लेगई। इस बीचमें वालिस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे। उसने आज उनको आयर के भीषण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया। यद्यपि वह

पहलेसे स्काटलेण्डका अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय यहसब लोग मौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पांच आदमी चुननेका अनुरोध किया। उसके अनुसार वालेस बायड क्राफोर्ड एडम और अचिङ्गलेकचुनेगये। इन पांचोंने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाही। तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनोंबार वालेसकेही नाम निकली। तब उसने सेनापतिका पदग्रहण किया और तलवार छूकर प्रतिज्ञाकी कि जबतक आयरकी हत्याका बदला न लूंगा तबतक पानी न पीऊंगा।

उसी दम वालेस की कार्य्य प्रणाली स्थिर हुई। उसने स्थिर किया कि आयर की बारक और शहर के जिन जिन मकानों में आज रातको अङ्गरेज ठहरे हैं उनमें आग लगादेंगे। उसने उस विश्वासिनी स्त्रीको और आयरके कुछ आदमियोंको हुक्म दिया कि तुम लोग जिन मकानोंमें अंगरेज हैं उनपर खड़ियासे दाग दे आओ और बीस आदमियोंको भेजा कि वह उनसब मकानोंके दरवाजोंपर जलनेवाली चीजें रख आवें। राबर्ट बायडको पचास आदमियोंसहित किलेके दरवाजे पर इसलिये तैनात किया कि जब चारों ओर आग लगे तब नगरकी रक्षाके लिये किलेसे सेना बाहर न निकलने पावे। बाकी आदमियों सहित वह स्वयं छावनी की तरफ चला और दागवाले सब मकानों के दरवाजों पर आदमी तैनात कर दिये। एकही वक्त बारक और दागवाले मकानों में आग लगा दी गई। जलनेवाली चीजोंके संयोगसे आग लगते ही चारों ओर धधक उठी मतवाले अङ्गरेज जहांजहां थे वहीं जलकर भस्म होगये। उस रातको किलेमें सिर्फ थोड़ीसी सेना थी क्योंकि प्रायः सब सेना सभा में आगई थी। जो लोग किलेमें थे उनमेंसे बहुतेरोंने अग्निकी ज्वाला देखकर किलेसे बाहर आनेकी कोशिश की बायडने कुछ रोक टोक न की। लेकिन किले में घुस कर जोलोग वहां छिपे थे उन सबको मारकर किला लेलिया। वहां उसकी रक्षाके लिये २० आदमी छोड़कर नगर की शान्ति रक्षामें वालेसकी मदद करनेके लिये बाकी साथियों

सहित बाहर आया। उस रात आयरमें सब मिलाकर ५ हजार अङ्गरेज अपने घोर विश्वासघातका प्रायश्चित्त करने के लिये काल के गाल में गये। १२९७ ईखी की ग्रीष्मऋतुमें यह घटना हुई।

यथासमय सब आकर मिले, तब वालेसने बिना विलम्ब ग्लासगो की यात्रा करनेका सङ्कल्प किया। क्योंकि वहां भी ऐसी एक सभा होनेकी बात थी और वालेसको खटका हुआ कि कहीं हमारे हित मित्रों पर वहां कोई विपद न पड़ी हो। उसने आयर के मुख्य मुख्य लोगोंको बुलाया। उनके हाथमें लौटने तक किले और शहरकी रक्षाका भार देकर तीन सौ सवारों सहित ग्लासगो को कूच किया। उनके पास घोड़े न थे इसलिये उन्होंने सृत अङ्गरेज सैनिकोंके घोड़ोंसे अपने अपने लायक ३०० घोड़े चुन लिये। ३०१ सवार बड़े वेगसे बातकी बातमें ग्लासगोके तोरणद्वारपर जा पहुंचे। अङ्गरेज डरके मारे अधीर हुए। विशपबेकके हाथ नगर और किलेकी रक्षाका भार था उन्होंने झट एक हजार सेना इकट्ठी की। वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक भाग अर्चिंगलेक को दिया और एक भागका सेनापति स्वयं हुआ। दोनोंने दो तरफसे शहर पर हमला करनेका प्रस्ताव किया। अङ्गरेज वालेस की सेना थोड़ीसी देखकर ताव में आये। फौरनही दोनोदलोंमें लड़ाई छिड़ गई। यद्यपि अङ्गरेजोंकी ओर प्रायः चौगुनी सेना थी तथापि वालेस और उसके वीरवृन्द अदमित तेजसे अङ्गरेज सवारोंको भूमि पर गिराने लगे। इधर अर्चिंगलेककी सेनाने उत्तर की तरफसे नगर पर आक्रमण किया। तब अंगरेज सेना दो हिस्सोंमें बंट गई। अर्चिंगलेककी सेनाने बड़े वेगसे टूटकर शत्रुसेना को तितर बितर कर दिया। इसी बीचमें वालेसने भी आगे बढ़कर एक तलवारसे अङ्गरेजी झण्डेवालेका सिर काट डाला। झण्डेके गिरतेही अङ्गरेजी सेनाके हृदयका बल टूट गया। चारसौ अङ्गरेज विशपबेकको लेकर दक्षिण जंगलकी तरफ भागे। वालेसने दलबल सहित पीछा करके बहुतोंको पछाड़ा। सर आमेर डी

वालेसकी मददसे बेक थोड़ेसे साथियों सहित जान लेकर भागने पाये थे।

जातीयदलकी इस बहादुरीसे संतुष्ट होकर स्काटलेन्डके बहुतेरे जमीन्दार (लार्ड) धीरे धीरे एडवर्डके विरुद्ध सिर उठाने लगे। बूकल, आथोल, मेनटीथ, लोरन, सर नील केम्बल डङ्कन प्रभृति पुराने खान्दानी लोग एडवर्डकी अधीनता छोड़कर जातीयदलके साथ सहानुभूति दिखाने लगे।

मेकफेडियन और सिर्फ ४ और जमीन्दार अङ्गरेजोंकी तरफ रहे। उन्होंने १५ हजार सेना लेकर सर नील केम्बलके नगरको कूच किया। यह शहर खाईसे घिरा हुआ था जिस पर सिर्फ एक पुल लटक रहा था। केम्बलने वह पुल फेंक दिया। अब सेना को खाई पार होनेका साहस न हुआ वह इसी पार बैठी रही। इधर केम्बेलने वालिसको खबर देनेके लिये दूत भेजा। केम्बेल और वालेस दोनों डंडीके स्कूलमें एकही साथ पढ़े थे। स्वदेशानुरागका भाव दोनोंके दिलमें उसी समय बढ़ा। अर्ल डङ्कन दूत बने उन्होंने ढूंढ़ते ढूंढ़ते अन्तमें डनडफ क़िलेमें वालेसको पाया। वह सुनतेही सर जान ग्रेहमको लेकर केम्बेलकी मददको रवाना हुआ।

इस समय एडवर्डके पक्षपाती अर्ल रोकबी असंख्य सेनासहित स्टर्लिंग कैसल नामक क़िलेमें थे। वालेस उसी राहसे आता था उसने उस क़िले पर भी अधिकार जमानेकी ठान ली। जब वालेस उसके दरवाजे पर पहुंचा तब अर्ल मलकम ससैन्य उससे आमिला। उसने मिलित सेनाके दो भाग करके पहला भाग मलकमके जिम्मे छोड़कर एक सौ छह छंटे और लड़ाके वीरोंको लेकर ग्रेहम सहित किलेमें प्रवेश किया। रोकबीने उस थोड़ीसी स्काटसेनाकी परवा न करके १४० तीरन्दाजोंसे उसका मुक़ाबला किया। दोनोंमें घमासान युद्ध हुआ।

ग्रेहम ज्योंही आगे बढ़ा त्योंही एक अङ्गरेजी तीरन्दाजका तीर उसके घोड़ेको लगा। ग्रेहम कूदकर जमीन पर

आया। यह देख वालेस भी घोड़ा छोड़कर पैदल हुआ। दोनों पांव-प्यादे घोर युद्ध करने लगे। इतनेमें मलकमने बाकी सेना लेकर किलेमें प्रवेश किया। अङ्गरेज सेनाके अब कान खड़े हुए। वह भागनेकी फिक्रमें लगी मगर राह न मिली। छायापाई करते वालेस रोकबीके सामने आ पहुंचा। झट उसकी तलवार ने रोकबीको काट डाला। धीरे धीरे स्काटवीरोंके अव्यर्थ अस्त्रोंसे सब अङ्गरेजो सेना मारी गई। सिर्फ रोकबीके दो पुत्र और २० सैनिक रहे। उनके आत्मसमर्पण करनेसे स्टर्लिंगकैसल स्काटोंके हाथ आगया। इस दुर्गकी रक्षाका भार मलकमको देकर वालेस केम्बलको सहायताको चला।

मेकफेडियन स्काट लोगों पर बड़ा भारी जुल्म करने लगा था उसके रक्तके प्यासे सैनिक बालक और स्त्रीको मारनेमें भी नहीं सकुचातेथे इससेवालेसने प्रतिज्ञा कीकि याती उसे उसके पापका पूरा दण्ड दूंगा या लड़ाईमें प्राण दूंगा। उसने दो हजार सेना लेकर केम्बलकी तरफ कूच किया। केम्बल उस समय आर्गाइलशायरमें वालेसकी बाट देखते थे। डंकन वालेसका पथप्रदर्शक होकर उसे आर्गाइलशायरको ले चला।

वालेसकी सेना चलते चलते थक गई। विशेषकर नाटे शरीरके कुछ सैनिक बहुत पिछड़ गये। आक्रमणमें विलम्ब करना या तितर बितर होकर आक्रमणकरना—दोनोंको हारकीजड़समझ कर वालेसने अपनी सेनाके पांच भाग किये। छांट छांटकर सर्वोत्कृष्ट एक सौ सवार स्वयं लिये, एक सौ सर जान ग्रेहमको दिये और सर रिचार्ड लन्डिन और एडम वालेसको पांच पांच सौ दिये। यह बारहसौ चुनी हुई सेना लेकर वह लोग आगे बढ़े। बाकी सेनाको धीरे धीरे आगे बढ़नेका हुक्म देगये।

इस तरह कतार बांधकर वह लोग ग्लान्डोकार्टमें आपहुंचे। यहां सर नील केम्बलसे मुलाकात हुई। केम्बल वालेससे मिलने के लिये कुछ आगे बढ़ आये थे। वालेसको पाकर उनके आनन्द

की सीमा न रही। केम्बलकी तीन सौ सेना सहित गिल माइ-केल नामका एक आदमी शत्रुसेनाका हालचाल लेनेके लिये भेजा गया। उसने एक शत्रु दूतसे सुना कि अङ्गरेजसेना उसीदिन ये ससो-रसे चली जायगी। पीछे ऐसा न हो कि वह दूत जाकर मेकफेडियन को हमारी खबर दे इस खटकेसे स्काटदूतने अङ्गरेज दूतको मार डाला। फिर उसने आकर वालेसको यह खबर दी।

केम्बलकी सेना लेकर अब वालेसके पास अठारह सौ सेना हो गई है। बीहड़ रास्तेका ख्याल करके वह लोग घोड़े छोड़कर पैदल शत्रुसेनाके सामने चले। मूसलधार वृष्टिकी तरह शत्रुसेना पर टूट पड़े। शत्रु सेना तितर बितर होगई। संख्याकी अधिकतासे फिर उसका सिलसिला बंध गया। वालेस, ग्रेहम, केम्बल, लण्डिन एडम वालेस और राबर्ट बायड—इन छः वीरोंका अद्भुत रणपा-ण्डित्य और अमानुषी शक्ति देखकर शत्रुसेना चकित और भय-भीत हुई।

निराशाके जोशमें मेकफेडियन और उसकी आइरिश सेना लड़ाईमें जान पर खेलने लगी। दो घण्टे तक घोर युद्ध किया। किन्तु स्काटिश जातीय दलका समस्त वेग अन्तमें मेकफेडियनकी आइरिश सेना पर जापड़ा। वह उसे संहाल न सकी और लड़ाई छोड़कर भागी। कुछ पहाड़ पर चढ़ गई किन्तु ज्यादातर हथि-यारोंसे बचनेके लिये जलमें कूद पड़ी। दो हजार आइरिश जलमें कूदे और फिर न निकल सके। आपही जलमें डूब गये। मेकफेडियनकी स्काटिश सेना अन्ततक लड़ी अन्तमें उसने हथियार डालकर वालेससे क्षमा मांगी। वालेसने हुक्म दिया कि हरगिज स्वजातिका खून न गिरने पावे। मेकफेडियनने भागकर एक कन्दरे की शरण ली थी। डंकानने वहां जाकर उसको मार डाला और उसका सिर लाकर वालेसको उपहार दिया।

जिन्होंने वालेससे शान्तिकी भीख मांगी उसने उन सबको उनकी जमीन लौटादी। लोरेनमें सर्वत्र अभूतपूर्व शान्ति

विराजने लगी। स्वदेशानुरागके पुरस्कारके तौर पर वालेसने डंकानके हाथमें लोरेनका किला सौंप दिया।

धीरे धीरे असंख्य स्वजातिप्रेमी स्काट वालेसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। सर जान रामजे, पुरोहित सिनक्लेयर, लार्डस्ग्राट आदि उनमें मुख्य थे। इधर वालेसकी जो सेना पिछड़ गई थी वह भी विजयक्षेत्रमें आपहुंची। मैदानमें मरी हुई शत्रुसेनाके शरीरमें जो हथियार और सामान अब भी मौजूद थे वह सब इसने लेलिये। अब स्काटसेनाकी संख्या बहुत बढ़ गई और वह विजयके उल्लासमें मस्त होगई।

वालेसने सुना कि स्कोन नगरमें आर्मेस बी नामक एक अङ्गरेज जज है। वह सर विलियम डगलसको लेकर वहां पहुंचा। उसके अचानक आक्रमणसे घबराकर वहांवाले भागनेलगे। आर्मेसबी कुछ आदमियों सहित निकल गया। बाकी सब इन दोनोंके हाथ मारे गये। वालेस और डगलस कीमती चीजें लूटकर जातीय छावनीको लौट आये।

सुविख्यात ब्रूसके ससैन्य आजानेसे इस समय जातीय दलका बल बहुत बढ़ गया था। जिस जातीय स्वाधीनताका यत्न वालेसने आरम्भ किया है सुप्रसिद्ध बेनकबरन रणक्षेत्रमें वीरवर ब्रूस उस यत्न की समाप्त करेंगे।

स्काटलेन्डके विद्रोहने ऐसा भीषण आकार धारण किया कि एडवर्ड अपनी फ्लेन्डर्सकी युद्धयात्रा रोक देनेको लाचार हुए। उन्होंने भानजे लार्ड हेनरी, पर्सी और राबर्ट डी क्लीफोर्डके अधीन चालीस हजार पैदल और तीनसौ सवार सेना स्काटलेन्डको भेजी। जब यह महती अङ्गरेजसेना एनमडेलसेहोकर जारही थी उसी वक्त रातको कुछ स्काटोंने उस पर आक्रमण किया। इसमें अङ्गरेजोंका नुकसान बहुत हुआ परन्तु स्काट उन्हें रोक न सके।

इस अङ्गरेज सेनासे स्काटसेनाकी इरविङ्गमें भेट हुई। स्काट लड़नेकेइरादेसे एक फ चेखेतमें सजेसजाये अङ्गरेजोंकी राहदेखतेथे।

स्काटोंका दल बड़ाजबर्दस्त था उसकोलेकर लड़ना बहुत मुशकिल न था किन्तु स्काटलेन्डके दुर्भाग्यसे जातीयदलमें इसी समय सेनापतित्वको लेकर बड़ा फसाद खड़ा होगया। जिस जातिका भाग्य फूटता है वह ऐसीही धड़ाबन्दीमें पागल होकर जातीय कर्तव्य भूल जातीहै। जातीय कर्तव्य भूलकर इस समय लुन्डिन; स्टूआर्ट, राबर्ट ब्रूस, सर विलियम डगलस, अलकजेन्डर डो लिनसे और वालेसके बहाल किये हुए नये विशप विसार्ट प्रभृति जातीय नेता अपने साथियों सहित जातीय दल छोडकर अङ्गरेजी छावनीमें चले गये। १२९७ ई० की तारीख ७ वीं जुलाईको इन विश्वासघातक जातीय नेताओंसे एडवर्डकी सन्धि हुई। एडवर्डने इस सन्धिके फैसलेमें जातीय नेताओंकी पूरी स्वाधीनता और जमानत ली। अङ्गरेजोंने समझा था कि चारोंओरसे निराश होकर वालेस अन्तमें इसी सुलहनामे पर सही करेगा। किन्तु उन लोगों की आशा पूरी नहीं हुई। जिसने स्वजातिके चरणोंमें अपना जीवन समर्पण कर दिया है, जिसने अपना स्वार्थ स्वजातिके स्वार्थ पर न्योछावर कर दिया है वह क्या जातीय मर्य्यादाके बदले शत्रुसे अपना प्राण भीख मांग सकता है? नहीं—हरगिज नहीं। वह स्काटकेसरी सर जान ग्रेहम, सर एन्ड्रू मरे और दूसरे हितमित्रों और सहचरों सहित मनमलीन करके पहाड़की ऊंची चोटियोंकी तरफ चला गया। इधर अङ्गरेज सेनापति पर्सी और क्लीफोर्ड स्काट लोगोंमें फूट डालकर और शरणागत स्काट बैरनोंको अधीनताकी बेड़ी पहनाकर झटपट इङ्गलेन्डको चलदिये।

राहमें जाते जाते स्काटोंके जीमें आया कि सेन्ट जानस्टन किले पर दखल करना चाहिये। यह किला खाई और दीवारोंसे घिरा था। दीवारें बहुत ऊंची न थीं इससे खाई पर तख्ते बिछाकर झट एक हजार सैनिक खाई पार करके और दीवार फांदकर किले के भीतर घुस गये और दरवाजा खोल दिया। समूची स्काट सेना भीतर चली गई। अङ्गरेज अचानकके आक्रमणसे घबरा गये।

किलेदार सर जान स्टिवार्थ मुख्य मुख्य ६० सैनिक लेकर नाव पर सवार हो डन्डीनगरको भाग गये। किले पर हमला करनेके समय रथवेन नामके एक स्क्वायरने तीस साथियों सहित पहुंचकर वालेस की बड़ी सहायता की। तीन दिन वालेस किलेमें लूटपाट करता रहा फिर रथवेनको किला सौंपकर उत्तरको चला गया।

उसने एवर्डीनमें एक जातीय सभा की। उसके आनेसे एबट काउपर नगर छोड़कर भागगये। उत्तरकी तरफ जाते जाते ग्लासिस नगरमें वालेस बिशप सिनक्लेयरसे मिला। सिनक्लेयर उस के साथ होलिये। ब्रेचिनमें आकर उन्होंने रात बिताई। सवेरे तय्यार होकर स्काटलैण्डका झण्डा उड़ाया और इङ्गलैण्डके विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला युद्ध की घोषणा की। मियरन्स जिलेसे होकर वहलोग गये। अंगरेज चारोओर डरकर भागने लगे। अन्तमें ४ हजार अङ्गरेजोंने कीन शहरके गिर्जेमें आकर शरणली। उस गिर्जेके विशपने इङ्गलैण्ड जानेकी आज्ञाचाही। किन्तु वालेस आयरका विश्वासघात यादकरके बदला लेनेको तयार हुआ। उसने गिर्जेमें आग लगा दी। देखते ही देखते चार हजार अङ्गरेज जलकर राख होगये।

इसके बाद वह लोग एवर्डीनमें गये वहां एक सौ अङ्गरेजी जंगी जहाज माल असबाबसे लदे समुद्रमें खड़े थे। वालेस सेनासहित उन पर टूटपड़ा और लूटपाटकर अन्तमें आग लगादी। पुरोहित स्त्रियों और बालकोंके सिवा और किसीको भागने नहीं दिया। जहाजके बाकी अङ्गरेज जल मरे जो किनारे थे वह वालेसकी तलवारके शिकार हुए।

वालेसने विजयीसेनासहित इसके बाद बूकनके लार्ड वोमेण्टकीतरफ कूच किया। अङ्गरेज लार्ड उनके आनेकी खबर सुनतेही शहर छोड़ कर समुद्रके रास्ते भागगये। इसके बाद उसने डन्डी किलेपरहमला करनेका विचारकिया। इसको छोड़कर फोर्थके और सब किले इस समय वालेसके हाथ आगये हैं। उसका आगमन सुनकर विश्वासघा-तक सर आयर डि वालेस इस जन्मके लिये जन्मभूमि छोड़कर

इङ्गलेण्ड भाग गया। वालेसकी विजयवार्ता उसने औरोंकी मार्फत एडवर्डके कानतक पहुंचाई एडवर्ड बहुत काममें फसेरहनेसे स्वयं तो न जासके मगर साठ हजार सेनासहित खजानची क्रेसिंहम और और अर्लवारेनको स्काटलेण्डपर भेजा। स्टर्लिंग किलेपर फिर दखल और स्काटलेण्डको अच्छीतरहसे पराजय करना इस चढ़ाईका मुख्य उद्देश्य था। विश्वासघातक अर्ल डनबर् इस अङ्गरेज सेनाके साथ टुइ नदीके किनारे आकर मिल गये। यह विराट सेना स्टर्लिंग महलके सिंह दरवाजे पर आंपहुंची, आतेही किला घेर लिया। अर्ल मलकम जातीय दलके प्रतिनिधि होकर इस किलेकी रक्षा करते थे।

यह सुनकर वालेस डन्डीके घेरेमें एक हजार सेना छोड़कर बाकी सेना सहित स्टर्लिंग कैसलको चला। राहमें जापको सेना लानेका भार सौंपकर और उसको मंगलके दिन ससैन्य स्टर्लिंगकैसल के सामने उपस्थित होनेका हुक्म देकर रामजे और ग्रेहमके साथ वालेस शनिवारको उस किलेकी तरफ रवाना हुआ।

एक लकड़ीके पुलसे किलेके भीतर जाना पड़ता था। वालेसने एक चतुर बढ़ईसे पुलको बीचोंबीचसे चिरवा दिया और उसपर इस तरह मट्टी दिलवाई कि किसीको उसका दो खण्ड होना मालूम न होसके। कट्टावके बीचमें इस तरह काठकी थूनियां दीं कि चाहे जितनी सेना पुलसे बेखटके पार होजाय। थूनियां इस ढङ्गसे लगाई गई कि एकके हटानेसे सब गिर पड़ें और पुल दो टूक होकर नदी में डूब जाय।

वालेसने उस बढ़ईको हुक्म दिया कि तुम लड़ाईके दिन यहां छिपे रहना। जब मैं शंख बजाऊं उसी समय थूनी हटाकर सरक जाना।

उस भयानक मुठभेड़का दिन आगया। अङ्गरेज सेना स्काट-सेनासे पचास गुनी ज्यादा थी। वालेस वह थोड़ीसी सेना किलेमें लेआया। अङ्गरेज सेनाके दो भाग होकर बीस हजार क्रेसिंहमके

अधीन आगे गई और ३हजार वारिनके अधिपतित्वमें पीछेपीछे आने लगीं। क्रेसिंहमकी सेनापुलपार होगई शंख नहीं बजा। स्काट डरे। पलभरमें वारिनकी सब सेना पुलके ऊपर आगई। तब शंख बजा। उसके साथ साथ वह लम्बा चौड़ा लकड़ीका पुल वारिनकी सेना सहित जलमें धस गया। अंगरेज सेनामें भारी हाहाकार मचा। गिरते हुए घोड़ों और घुड़सवारोंकी चीखसे आकाश फटने लगा। इधर वालेस, ग्रेहम, बायड रामजे प्रभृति मस्त शेरकी तरह क्रे सिंहमकी सेना पर आटूटे। वालेस क्रे सिंहमको लक्ष्य करके बड़ी दिलेरीसे उधरही दौड़ा। उसकी यह रण चण्डीमूर्त्ति देखकर शत्रुसेनाको रोकनेका साहस न हुआ। उसने बेधड़क क्रे सिंहमके सामने जाकर एकही तलवारमें घोड़े और घुड़सवारको काट गिराया। सेनापतिके पतनसे अङ्गरेज सेनाका साहस टूट गया। तथापि उसने असीम साहसके साथ कुछ देर युद्ध किया। मगर जब देखा कि दस हजार सेना सेनापतिके साथ सिधार गई तब वह डरसे तितर बितर होकर भागगई किन्तु शत्रुसेनाके पीछा करनेसे कोई न बचा। जो जलमें कूद पड़ेथे वह डूब गये। जिन्हें जलमें कूदनेका साहस न हुआ वह स्काटोंकी तलवारोंके नीचे आगये। इसतरह जो बीस हजार अङ्गरेज सेना पुल पार हुई थी उसमेंसे एकभी सैनिक अपने देशको न लौट सका। वारिनकी सेनामेंसे जो पुलके उसपार थे वह यह हाल देखकर एकसांस डनबरकी तरफ़ भागे। किन्तु वहभी पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथसे न बचे। वालेस और ग्रेहमने शत्रुओंको हेडिंगटन नगरमें जा पकड़ा। उनके हथियारोंसे कितनेही मारे गये। यहां रामजे, बयिड, लन्डिन एडम वालेस और अर्लमलकम सहचरों सहित उससे आमिले। १२८७ ईस्वीकी ११वीं सितम्बरको यह प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें बहुत थोड़े स्काट मारे गये जिनमें एन्डरू मरेके सिवा और किसी सेनापतिकी मृत्यु नहीं हुई। मगर उस बेशुमार अङ्गरेज सेनामेंसे बहुतही थोड़े आदमी भागकर बचे थे। क्रे सिंहम प्रभृति सरदार

लोग उसी मैदानमें बेसमझ मारे गये। इतने दिनमें स्काटोंने वार-विक डनवर आयर आदिकी भयानक हत्याका बदला लिया। इतने दिन पीछे उनके हृदयकी दाह बुझी।

स्काटलेन्डके रक्तसे जो अङ्गरेज शरीर मोटा ताजा हुआ था उसी अङ्गरेज शरीरके रक्त मांससे आज स्काटलेन्डकी भूमि उपजाऊ हुई।

वालेस सहचरों सहित वह रात हेडिङ्गटन नगरमें बिताकर दूसरे दिन स्टर्लिङ्ग कैसलमें आपहुंचा। बिना बिलम्ब उसने घोषणा की कि स्काटलेन्डके सब बेरन आकर जातीय स्वाधीनता फिरसे कायम करने और जातीय शान्तिकी रक्षाके लिये मेरी मातहती स्वीकार करें। जिन्होंने इससे इनकार किया वालेसने उनके दर्पका उचित दण्ड दिया। सरजान मेन्टीथ आदि पुराने खान्दानी बेरनोंने एकएक करके उसकी मातहती स्वीकार की।

उधर वारेन अपनी अपार सेना स्टर्लिङ्ग कैसलके रणक्षेत्रमें खोकर बड़ी फुर्तीसे वारविककी तरफ भागे। स्वदेश वासियोंसे उस अङ्गरेज मेधयज्ञका समाचार सबसे पहले उन्हींको कहना पड़ा। इस समाचारसे स्काटलेन्डके अङ्गरेज इतने डरे कि एक घड़ी भी स्काटलेन्डमें रहनेका उन्हें साहस न हुआ। उन्होंने अपना अपना किला छोड़कर झटपट इङ्गलेन्डका रास्ता लिया।

इसप्रकार स्टर्लिङ्ग युद्धके बाद दस दिनमें वारविक और रक्स-बराके सिवा स्काटलेन्डके और सब किले वालेसके हस्तगत होगये। बहुत दिनके बाद फिर स्काटलेन्डकी जातीय पताका फर्राने लगी। इतने दिनपर स्काटलेन्ड स्वाधीन हुआ। आज जातीय दलके हृदयमें आनन्द नहीं समाता। पतित जातिके सिवा उस आनन्दका अन्दाज और कौन कर सकता है?

वालेस स्काटलेन्डका गवर्नर बनाया गया। उसने मित्रवर क्राफोर्डको एडिनबराका किला सौंप दिया।

यह शोक सम्वाद समुद्र पार होकर फ्लेन्डर्समें एडवर्डके पास पहुंचा। उनके सिरसे मानो ताज खस पड़ा।

## दसवां अध्याय ।

### स्टिरमूर और लेमरमूरका युद्ध ।

स्टरलिंग ब्रिजकी लड़ाईके बाद स्काटलेण्डमें पांच महीने शान्ति रही। पांच महीने अङ्गरेज़ोंको स्काटलेण्डकी शान्ति भङ्ग करनेका साहस न हुआ। इसी भीतरी शान्तिके समय वालेसने पर्थनगरमें एक जातीय सभा बुलाई। स्काटलेण्डके सब जागीरदार और बड़े आदमी उस सभामें जमा हुए। सिर्फ विश्वासघातक कासपेट्रिकने आना अस्वीकार किया। उसने अपने किलेमें बैठकर उस जातीय बलको नीचा दिखाया और उस जातीय बुलावे पर बहुत व्यंग बाण छोड़े। सभाके सब लोगोंने उसी वक्त उसपर सेना भेजनेके लिये वालेसको सलाहदी। किन्तु वालेसने यह न करके पहले उसे कहला भेजा कि अगर आप अपने पिछले अपराधके लिये क्षमा मांगें और आगे विश्वास दिलावें तो इस बार आप माफ किये जायंगे। यह बात सुनकर कास-पेट्रिक बहुत हंसा और उसने दूतके द्वारा उत्तर भेजा कि अपने जङ्गली राजासे जाकर कहना कि कासपेट्रिक इस जिन्दगीमें उसकी अधी-नता न मानेगा और अपने राज्यमें शासन करनेसे भी न डरेगा।

इस हेकड़ी पर समस्त जातीय सभा कासपेट्रिकसे बिगड़ गई। क्रोधसे वालेसकी आंखोंसे चिंगारियां निकलने लगीं। उसने प्रतिज्ञा की कि कासपेट्रिक और मैं दोनों एक साथ स्काटलेण्डमें हुकूमत नहीं कर सकते एक स्थानमें दो तलवार नहीं रह सकतीं। यह प्रतिज्ञा करके वह मस्त हाथीकी तरह सभासे निकला। वालेसकी जो प्रतिज्ञा थी वही काम। उसने उसी वक्त दो सौ सवार सेना लेकर डनबरको कूच किया। रास्तेमें उसकी सेना दूनी होगई।

अर्लपेट्रिकने नौ सौ सेना लेकर उस प्रवाहिनीको चाल रोकना चाहा किन्तु प्रबलप्रवाहिनी तिनकोंकी तरह पेट्रिककी सेनाको चीर कर डनबरके दरवाजे पर आपहुंची। जिस तेजीसे आई उसी

तेजीसे किलेपर अधिकार करके उसे सीटनके सपुर्द कर दिया। कसपेट्रिक जान लेकर किला छोड़ इङ्गलेण्डकी तरफ भागा जाता था। वालेसने तीनसौ सेनासे उसका पीछा किया और उसे भगाता भगाता एट्रिकवन तक लेगया। आगे जाना बेफायदा समझकर लौट आया।

इधर भगोड़े जागीरदारके दलसे ब्रूस और विशप बैक् प्रभृति जागीरदार आमिले। ब्रूस इनमें जल्द शामिल न होता किन्तु उन लोगोंने उसे यह कह कर राजी किया कि वालेस स्वयं स्काटलेन्डकी राजगद्दी चाहता है। अर्लपेट्रिकने बीस हजार सेना लेकर स्वयं उनपर घेर लिया और जहाजी सेनासे तरीके रास्ते रसद आना रोक दिया। विशपबेक दस हजार सेना लेकर डर्हममें रहे।

वालेस यह खबर पातेही पांच हजार सेना लेकर सीटनकी मद्दतको दौड़ा। सीटन ज्यादा सिपाहियोंको किलेकी निगरानीमें तैनात करके थोड़ेसे साथियों सहित वालेससे आमिला। विशपबेक दस हजार सेना सहित स्पिटमूरमें छिपकर वालेसकी चाल देखते थे। इस बीचमें पेट्रिक भी किलेका घेरा उठाकर अपनी समूची सेना सहित स्पिटमूरमें बेकसे आमिला। इससे शत्रुसेनाका जोर तीस हजार या उससेभी ज्यादा होगया। वालेस केवल पांच या छः हजार सेना लेकर उस भारी सेना पर चढ़ दौड़ा। प्रचण्ड झरना जैसे नदीमें गिरकर उसके जलमें खलबलाहट डाल देता है वैसेही वालेस शत्रुसेनाको उथल पुथल करने लगा। किसे ताकत है जो वालेस और उसके वीरोंकी गति रोकसके? वालेस तलवार हाथमें लेकर धड़ल्लेसे अकेले शत्रु सेनाके व्यूहमें घुस गया। असंख्य शत्रु सेनाने उसे घेर लिया। मानो सप्तरथी मिलकर अभिमन्युको मारने चले। कसपेट्रिकने उसे जरा जखमी किया। घोड़ेके मारे जानेसे उसे पांवप्यादे लड़ना पड़ा। इधर उसके सैनिक उसे न देखकर बहुत घबराये कितनेही वहांसे सरक गये। उन्हें उसकी यह हालत नहीं मालूम हुई। कसपेट्रिकने घोड़ेपर सवार होकर

पांवप्यादे वालेसको वर्छेसे मारना चाहा किन्तु वालेसकी असाधारण रण-कुशलतासे उसकी सब कोशिशें व्यर्थ होने लगीं। इधर ग्रेहम लोडर, लायल, हे, रामजे, लुंडिन, बायड, सीटन आदि जागीरदार वालेसको न देखकर पांच हजार सेनासहित शत्रु के व्यूहमें घुसगये। उनको रोकने जाकर बिशपबेकको मुंहकी खानी पड़ी। जैसे हाथियोंका झुण्ड केलेके बनमें जाकर सामनेके पेड़ोंको उखाड़ कर पैरों तले रौंदता है उसी तरह उस वीरदलने सामना करनेवाले अङ्गरेजोंको रौंद पटककर वालेसका उद्धार किया। वालेस घोड़े पर सवार होकर पीछा करनेवाले शत्रुओंका हमला व्यर्थ करके अपनी छावनीमें लौट आया। इस बीचमें वहाँ उसके चार हजार साथी आजुटे थे। स्काटिश योद्धाओंके मैदानसे चले जानेसे कार्क-पेट्रिकको ही जय हुई किन्तु वह जय उसे बहुत बड़े दाम पर खरी-दना पड़ी थी। इस मैदानमें सात हजार अङ्गरेज-सेनाकी समाधि हुई। इधर स्काटिशदल पांचसौसे अधिककी मौतें नहीं हुईं और कोई स्काटिश कर्मचारी मारा नहीं गया। विजय लाभ करके भी कार्क-पेट्रिक सुखी नहीं हुआ, क्योंकि अगणित सेनाके मारे, और वालेस के भाग जानेसे उसको बहुत अफसोस हुआ था।

बिशपबेक स्काटिश सेनाके फिर हमलेके डरसे लैमरमूरको तरफ चलदिये। इधर स्काटिशसेनाकी हारकी खबर चारों ओर फैलनेसे स्काटलेण्डके वाशिन्दे डरकर स्काटिश जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़ेहुए। सब मिलाकर दो हजार नईसेना आकर जमाहुई। इसीको लेकर वालेस बिशपबेकका पीछा करने लैमरमूरकी तरफ चला। सवेरे वहलोग एकाएक अंगरेजी छावनीके सामने जापहुंचे। अंगरेज सेनाको पहलेसे इसकी कुछ खबर न थी इसलिये वह शान्ति-दायिनीनिद्राकी गोदमें आराम कर रही थी। स्काटिश सेनाने दो हिस्सोंमें बटकर दोतरफसे हमला किया। बहुतसे सैनिक सदाके लिये सोगये, जो उठे वह किधर भागे कुछ पता नहीं। किन्तु बिशपबेक अपनी जगहसे एकपैरभी इधर उधर न हुए वह लुन्डिनकी तलवारसे

घायल हुए तथापि बहादुरीसे लड़ते रहे। किन्तु जब शरीर शिथिल होगया तबवह मैदान छोड़कर भागे। कसपेट्रिद और ब्रूसनेभी पांच हजार सेनासहित वही रास्ता लिया। भागते भागते अङ्गरेज अन्तमें डर्हम किलेमें जाकर छिपे। बिजयी स्काटसेनाने टुइड नदीतक अंगरेज़ सेनाका पीछा किया था लड़ाईके मैदानमें और भागते समय बीस हजार अङ्गरेज मारे गये। ष्टिटनूरकी लड़ाईमें अङ्गरेजोंने बिजय पाकरभी ७ हजार सेना खोई थी इस लेम्बरमूरकी लड़ाईमें हारकर बीस हजार सेना खोई। इससे उनके मनमें उत्साह न रहा। वह बिराट अङ्गरेज सेना तितर बितर होकर भाग गई। वालेस मौका पाकर कसपेट्रिकका किला उखाड़ने और खेत तहस-नहस करने लगा सिर्फ डनबरका किला साबित छोड़ा।

लड़ाई शुरू होनेके अठारहवें दिन वालेस पर्थनगरमें लौट आया उस समयभी वहां जातीय सभाका अधिवेशन होरहाथा। वालेसका विजय समाचार सुनकर सबलोग आनन्दित हुए। जातीयसभाने उसे समूचे स्काटलैण्डका गवर्नर बनादिया। जागीरदारोंने अबके एक वाक्यसे उसकी अधीनता स्वीकारकी। वालेस स्टर्लिंग समरको विजयके बाद अपने हितमित्रों और सेनाद्वारा गवर्नर बनाया गयाथा किन्तु इसबार समस्त जातिने एक वाक्यसे उसे उस गौरवके पद पर अभिषिक्त किया। इसी समयसे वह वास्तवमें स्काटलैण्डका प्रतिनिधि और शासनकर्ता कहा जासकता है।

स्काटलैण्डका गवर्नर मुकर्रर होनेपर सेनाविभाग पर वालेसकी पहली और पूरी निगाह पड़ी। ग्रन्थके आरम्भमें कहा गया है कि सामन्त तन्त्रमें राजाको भी सब तरहसे सहायता मिलनी मुशकिल होती थी। जागीरदारोंकी ईर्षा और अहङ्कारका बुरा नतीजा वालेस पहलेही भोग चुका था। इसलिये विपद पड़ने पर उसे उनसे कुछ सहायताकी आशा न थी। किसानों और गुलामोंका स्वाथ जागीरदारोंके स्वार्थसे ऐसा मिला हुआ था कि उनसे भी किसी तरहकी सहायताकी उम्मेद न थी। इसलिये वालेसने स्थायीसेना

रखनेका विचार किया। किन्तु एक दम नया ढङ्ग चलानेसे जागीरदारोंकी नाराजीका खटका था इसलिये उसने पहले बीचका रास्ता लिया। तनखाहदार स्थायी सेना न कायम करके उसने वर्तमान मिलशिया (अस्थायी सेना) की नींव डाली। समूचे स्काटलेन्डको कई जिलोंमें बांटा। सोलह और साठ वर्षके अन्दर जिन की उमर थी उनमें जो हथियार बांधने योग्य थे उनकी एक फिहरिस्त तय्यार की। इस अस्थायी सेनामें एक तरहका नया ढङ्ग चलाया। हर चार आदमियों पर पांचवें, हर नौ आदमियों पर दसवें, हर उन्नीस पर बीसवें इत्यादि इसी हिसाबसे हर ९९९ पर पर हजारवें आदमीको सेनापति मुकर्रर किया। उसके हुक्मकी पूरी तामील हो इसके लिये हर गांवमें फांसीकी एक टिकठी रखी गई। जो डरपोक कायर पुरुष स्वदेशरक्षाके लिये बुलाने पर भी हथियार उठानेसे नाहीं करता, दृष्टान्तसे दूसरोंकी 'नहीं' छुड़ानेके लिये वह फांसी पर लटका दिया जाता। जो जागीरदार अपनी प्रजाको देशहितैषीदलमें शामिल होनेसे रोकता वह कैदखाने भेजा जाता या उसकी जायदाद जातीयभाण्डारमें जब्त करली जाती। यों उसकी अस्थायी सेना बनी। इन लोगोंको हमेशा हाजिर रहना नहीं पड़ता, अपने अपने दलपतिके अधीन रहकर विद्या सीखना पड़ती और बुलाये जाने पर जातीय भण्डेके नीचे आकर खड़ा होना पड़ता था।

वालेस और उसकी सहकारी मरे ने यों जातीय सेना बनाकर पीछे जातीय वाणिज्यकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। वालेस केवल असाधारण वीरही नहीं था, राज्यको धनधान्य पूर्ण करने और बन्दोबस्त रखनेमें भी वह बहुत प्रवीण था। उसने हमबर्ग और लूबेकनगरसे स्वाधीन वाणिज्यकी सन्धि की। उस सन्धिपत्रसे वालेसकी राजनीतिज्ञताका बहुत कुछ पता लगता है।

वालेस इस समय प्रभुत्वकी चरमसीमा पर पहुंच गया है। उसकी प्रभुताका कोई मुकाबला करनेवाला नहीं है। इतने पर भी

वह स्वयं भोगविलाससे परे राजनीतिक संन्यासी था। "आदानं हि विसर्गाय"¶ दूसरेसे धन लेना केवल दानके लिये है—इस नीति पर चलकर उस वीर संन्यासीने विजयप्राप्त भूमि और धन सब अनुचरों को बांट दिया। राज्यके सब ऊंचेऊंचे पदों पर उन्हें नियत किया। जो लोग स्वदेशके उद्धारमें जीवन विसर्जन करनेके लिये उसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए थे उन अनुचरोंको वह प्राणसे भी प्यारा जानता था। इसीसे आज उसके इख्तियारमें जो कुछ था सब उन्हें देकर अपने हृदयको परितृप्त किया। उसने अपने सगे सम्बन्धियोंको एक कौड़ी नहीं दी और न कोई मामूली ओहदाही दिया। क्योंकि अपनेको या अपने सगे सम्बन्धियोंको मालदार बनाना उसके जीवनका उद्देश्य नहीं था। वह सर्वत्यागी था और अपने सगे सम्बन्धियोंको भी सर्वत्यागी होकर जातीयव्रतमें जीवन उत्सर्ग करनेका उपदेश देता था।

वह चाहता तो इस समय वेलटके स्काटलेन्डका सिंहासन ले लेता। क्योंकि उस समय स्काटलेन्डमें ऐसा एक आदमी भी न था जो उसकी मर्जीके खिलाफ चलता। किन्तु वह अङ्गरेजोंके यहां कैद हुए स्काटलेन्डनरेश वेलियलका ताज स्काटिश सिंहासन पर रखकर उसके प्रतिनिधिके तौरपर काम करता था। इच्छा थी कि बेलियलको अङ्गरेजोंके पंजेसे निकाल करके स्काटिश सिंहासन पर बिठावे और आप झोंपड़ेमें जाकर रहे। अपने अभ्युदयकी लालसा ने वालेसके हृदयको कभी कलंक नहीं लगाया। तथापि "द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मानाम्"* मतिमन्द लोग महात्माओंके चरित्रको दूषते हैं। अधिक क्या, कहें वीरवर ब्रूस भी वालेसके देवतुल्य चरित पर सन्देह करके विपक्षियोंसे जामिला था। आपसका विश्वास न होनाही जातीय पतनकी जड़ है। वैसेही परस्परका अटल विश्वासही जातीय अभ्युदयका अद्वितीय सामान है। उसीके बिना आज भारतकी यह दुर्दशा है!

¶ रघुवंश  * कुमारसम्भव।

## ग्यारहवां अध्याय।

वालेसकी इङ्गलेन्ड पर चढ़ाई—सेन्ट अलबनकी सन्धि।

१२९७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कसप्रेङ्गिकाकी सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढ़ाई करना चाहते हैं। यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा बटोरी। उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी जमा हुए। उसने जागीरदारोंको सम्बोधन करके कहा—"एडवर्ड स्काटलेन्डपर फिर चढ़ाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता हूं कि देहमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा।' जागीरदारोंने एक स्वरसे बड़े उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामें सहायता देना स्वीकार किया। ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छांट लिये। जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्य्यके व्रती थे वालेसने उन्हींको चुना। बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया। लगातार लड़ाइयां होनेसे इस देशकी भीतरी हालत बिगड़ गई थी इससे वालेसने कहा—अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है।

सागरगामिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंगलेन्डकी तरफ चली। वालेसका इरादा था कि एडवर्डको स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें। इसलिये वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इंगलेन्डकी तरफ रवाना हुए। इस बार स्काटिश भाग्यकी इंगलेन्डके मैदानमें परीक्षा होगी। अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे। इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके बड़े बड़े जमींदारोंको साथ नहीं लिया। कारण अगर वह न लौटे तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होसकेगी। बहुत कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंको साथ

लेगया। बड़े आदमियोंमें सिर्फ मलकम, केम्बल, रामजी, ग्रेहम, एडम, वायड, अचिंगलेक, लुन्डिन, लौडर, हे और सीटनने साथ नहीं छोड़ा। इस सहती सेनाने ब्रविसके मैदानमें आकर छावनी डाली। वहांसे सिर्फ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रक्सबरा किलेके द्वार पर पहुंचा और किलेदार सर रेल्फग्रेको बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चाबियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नहीं तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा। उसने रामजीकी मारफत ऐसाही हुक्म बारविक कमेंले भी भेज दिया।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना टुइड नदी पार होकर नारदम्बरलेण्ड और कम्बरलेन्डमें दाखिल हुई। मतवाले हाथीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला। आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया। यार्कशायरकी भी यही दशा हुई। सेनाको बदला लेनेका जोश चढ़ा था वह जहां जाने लगी वहां तलवार और आगसे काम लेने लगी। पन्द्रह दिन के अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—"इसके बादही एडवर्ड लड़ाईमें वालेसका मुकाबला करेंगे।" स्काटलेन्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ कूच किया। वहां पहुंचकर छावनी डाली। चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सब को बुलाया।

एडवर्डने सन्धिका नियम तोड़कर सन्धिके भीतर ही बेखबरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित, वालटननगरके कप्तान सर रेल्फ रेमन्डको भेजा। वालटननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमैन रहते थे। वह लोग यह खबर स्काटिश छावनीमें लेगये। वालेसने उसी वक्त, ह्विउ, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी। हुक्म दिया कि

राहमें छिपकर आनेवाली अङ्गरेजीसेनापर बेखबरीमें हमला करना। सर रैल्फ रेमन्ड सात हजार सेना लेकर आते थे अचानक तीन-हजार स्काचसेनाने बड़े बेगसे गर्जकर उनपर आक्रमण किया। उसकी प्रचण्ड तलवारोंसे पलक भरमें तीन हजार अङ्गरेज मारे गये बाकी डरके मारे जहांतहां भाग गये। सेनापति सर रैल्फ लड़ाईमें काम आये। वालेस फौरन उस भागती हुई अङ्गरेज सेना का पीछा करके मालटन नगरमें दाखिल हुआ और वहां असंख्य शत्रुओंको मारकर शहर लूट लिया। दो दिन रहकर शहरका किला गिरादिया और फिर छकड़ोंमें लूटका माल असबाब लदाकर अपनी छावनीमें लेआया। लौटकर अपनी सेनाको अचानकके आक्रमणसे बचानेके लिये छावनीके चारोंओर चारदीवारी बनाई।

इससे एडवर्ड समझ गये कि वालेस जल्द इंगलैन्ड छोड़ना नहीं चाहता। अब उनके जीमें डर समाया। उन्होंने पमफ्रेट नगरमें पार्लीमेन्टका अधिवेशन किया; किन्तु लॉर्डोंने कहा कि जबतक वालेस स्काटलेन्डका मुकुट नहीं पहनता तबतक हमलोग आपको उससे लड़ने नहीं देंगे। पार्लीमेन्टकी यह राय स्काटिशछावनीमें भेजी गई। इसके फैसलेके लिये केम्बल आदि स्काटिश वीरोंने वालेसको ताज पहननेका अनुरोध किया। उसने दृढ़तासे इस प्रस्तावको अस्वीकार किया। अन्तमें अर्ल मलकमकी सलाहसे एडवर्डका उज्र मिटानेके लिये सिर्फ एक दिन अपनेको स्काटलेन्डका राजा कहनेका हुक्म दिया। तोभी अङ्गरेज खुली लड़ाईमें वालेसके सामने आनेका साहस न कर सके। उन्होंने सलाह की कि किलेवाले शहरोंकी रक्षा करें और सब बाजार बन्द करके वालेसकी सेनाको रसद न मिलने दें। उनकी यह कोशिश व्यर्थ हुई। वालेसने सन्धि कास मय बीत जानेके बाद भी पांच दिन तक राह देखी तो भी अङ्गरेज सेनाका दर्शन न पाया तब अपना झण्डा उड़ाया और एड-वर्डको अयोग्य राजा कहकर घोषणा की। वह नरदालरटन शहर जलाकर खेती बरबाद करता यार्कशायरसे होकर जाने लगा।

उसकी सेना गिरजे और स्त्री बच्चोंके सिवा और कुछ नहीं छोड़ गई।

धीरे धीरे वह जबरदस्त सेना यार्कनगरके सामने आपहुंची। यार्कनगर किलेसे सुरक्षित था वहां बहुत सेना तैनात थी। स्काटोंने चार हिस्से होकर चार जगहसे उस किले पर हमला किया। उनके साथ चार हजार तीरन्दाज थे। इधर नगरमें भी ४ हजार धनुर्धर और बारह हजार दूसरी सेना थी। इसलिये उसने बड़ी कामयाबीसे स्काटोंका हमला व्यर्थ किया। स्काट लोग डरसे नगर छोड़कर भाग गये।

इधर रात होगई। स्काट रात भर शहरसे बाहर छावनी डाले पड़े रहे। सारी रात मशाल जलाकर वह लोग शत्रुओंका रंगढंग देखते थे। यद्यपि उनमें बहुतसे घायल हुए थे किन्तु एक भी स्काच मारा नहीं गया। इसीसे स्काटोंने हार कर भी हिम्मत नहीं हारी।

दूसरे दिन सूर्य्योदयके बाद स्काटोंने नये उत्साहसे पहले दिनकी तरह कतार बांधकर नगर पर फिर आक्रमण किया। इस दिन भी आग फेककर तथा कई तरहसे शहरको बड़ी हानि पहुंचाई किन्तु शहरमें घुस नहीं सके। फिर रात होगई फिर स्काटोंने शहर-पनाहके बाहर छावनी की। सब आराम करने लगे मगर वालेस की आंखोंमें नींद नहीं थी। वह घोड़े पर सवार होकर चारोंओर देखता फिरता था कि प्रहरी पहरा देरहे हैं या नहीं। इतनेमें एकाएक पाससे शत्रुसेना देखी। सर जान नाटन और सर विलि-यम ली पांच हजार सेना लेकर चुपके चुपके हमला करनेकी नीयत से स्काटिश छावनीकी तरफ बढ़ रहे थे। देखतेही वालेसने बिगुल बजाया, फौरन उसकी हमेशा मुस्तैद सेना उठकर अस्त्रशस्त्रसे सज्जित हुई। शत्रु शहरपनाहसे निकलकर पहले अर्ल मलकमके सामने आये। वालेस उसे हठी समझता था इसलिये स्वयं लड़ाईमें पहुंचा। दोनों मिलकर शत्रु सेनाको मारने लगे।

अन्तमें सर जान माइन और १२०० सेनाके मारे जानेसे अङ्गरेज

पीठ दिखाकर शहरमें भाग गये। स्काटोंने विजयोत्साहसे छावनीमें लौटकर आरामसे रात बिताई। सवेरे उठकर फिर शहर पर चढ़ाई की। इस तरह बहुत दिनके घेरेके बाद यार्कशहर ने सोना देकर प्राणभिक्षा चाही। वालेसने इस शर्तपर उन्हें छोड़ना चाहा कि वह लोग शहरपनाह पर स्काटिश भण्डा गाड़ने दें। यार्क लाचार राजी हुआ। स्काटलेन्डका भण्डा यार्क शहरकी दीवार पर फर्राने लगा। पांच हजार पौण्ड कर और इफरातसे रोटी शराब तथा दूसरी खानेकी चीजें पाकर स्काट बीस दिनके बाद शहर छोड़कर चले गये।

अप्रैलका महीना आया। अभीतक वालेस और उसकी सेना इंगलेन्डमें है। रसदका मिलना मुशकिल होजानेसे लाचार उसे लूट पाटकाही सहारा लेना पड़ा। वह लोग जंगली हरिण मारकर और खेतकी खड़ी फसल काटकर किसी तरह पेट पालने लगे। रास्तेमें दक्षिणकी तरफ कूच कर गये। राहमें अग्निखेला करने लगे। गांव शहर लूटती जलाती वह अवध्य सेना लन्दनकी तरफ जाने लगी। तोभी अङ्गरेजसेनाने वालेसका सामना करनेका साहस नहीं किया। उसने पीछे हटते हटते अन्तमें लन्दन जाकर छावनी डाली।

उधर रसदकी कमीसे वालेसको आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई। उसने अपने भण्डा लेचलनेवाले जापको सलाहसे रिचमन्डको कूच किया। वहां अभीतक इफरातसे रसद थी। उसे पाकर उसकी सेना बेहद खुश हुई। रिचमन्डमें बहुतसे स्काच कैदी और मजदूर थे। यहां नौ हजार स्काच वालेसके भण्डेके नीचे आखड़े हुए। यह सम्मिलित सेना वहांसे रामसवार्थको रवाना हुई।

स्काचोंने उस शहरको सहीसलामत छोड़ जाना चाहा था मगर नगर रक्षक सैनिकोंने उन पर ऐसा अत्याचार किया कि उन्होंने किलेको घेरकर आग लगा दी। किलेदार फिहियूने किलेसे ज्योंही बाहर निकलना चाहा त्योंही वालेसकी तलवारने उसका सिर धड़

से अलग कर दिया। पीछे स्काटोंने किलेमें घुसकर बच्चे बूढ़े और स्त्रियोंको छोड़ बाकी सबको यमलोक भेज दिया। रात वहीं बिताई। सवेरे किलेका माल लेकर चलते बने। वालेसने फिलिप्स के सिर सहित एडवर्ड या उनको मन्त्रीसभाके पास यह खबर भेजी कि अगर आप पूर्वप्रतिज्ञानुसार मुझे युद्ध न देंगे तो मैं एक बारही लन्दनके तोरणद्वार पर जापहुंचूंगा। मन्त्रिसभा बुलाई गई बहुत बड़ी बहसके बाद तय हुआ कि चाहे किसी दाम पर हो शान्ति मोल ली जाय! यह बात तय हुई किन्तु किसीने दूत बनना स्वीकार नहीं किया। अन्तमें एडवर्डकी रानी स्वयं स्काटिश छावनी में जानेके लिये जिद करने लगीं। ऐसी अफवाह है कि वालेसके वीरोचित गुणों पर रानी यहां तक मुग्ध होगई थीं कि उसकी प्रेमाभिलाषिनी हुई थीं। जोहो इधर स्काट हारफोर्डशायरके सेन्ट अलबन शहरमें आपहुंचे। नगरके पादरीने मदमांससे उनकी बड़ी खातिर की। इससे उन्होंने नगरको कुछ नुकसान नहीं पहुंचाया। यहां स्काट छावनी डाल और चन्दोवा तानकर राजमहिषीकी बाट देखने लगे।

वालेसने उस शुभदिनको खूब सवेरे उठकर ईश्वरप्रार्थनासे निश्चित हो वीरवेश धारण किया। उसके चमकते हुए बख्तर पर सूर्य्यकी किरणें पड़कर चारों ओर झलकने लगीं। नंगी तलवार कमरसे जांजटकी। उसका चमकता हुआ कमरबन्द मानो सूर्य्यकी किरणोंको खींचने लगा। उसने हाथमें बढ़िया इस्पातका बना दण्ड धारण किया। देखकर मालूम हुआ कि मानो भीम फिर पृथिवी पर आया है। वालेस इस प्रकार चन्दोवेके नीचे राजमहिषीकी बाट देख रहा था कि इतनेमें रानी पचास भले घरकी स्त्रियों और सात बूढ़े पादरियोंके बीचमें, घोड़ेपर सवार स्काटिश छावनीमें आपहुंचीं। जहां वीरकेसरी बैठा था वह लोग वहीं जाकर चन्दोवेके सामने खड़े हुए। उस वीरके सामने पहुंचतेही रानी झट घोड़ेसे उतरकर घुटना टेक वीरपूजा करना चाहती थीं किन्तु

अर्ल मलकमने उन्हें इससे मना किया। वालेसने रानीका हाथ धरकर उनका मुकुट चूमा। उनमें राज्यसम्बन्धी विषयों पर बहुत बात चीत हुई। दोपहरका खाना खानेके बाद दरबार हुआ। रानी ने वालेसको फुसलानेकी हजार कोशिश की किन्तु उसे किसी तरह टससे मस न कर सकीं। अनुकूल सन्धि पानेकी आशासे अन्तमें सोनेका लोभ तक दिखाया गया किन्तु वह आशा भी विफल हुई। स्वदेशके लिये प्राण न्यौछावर करनेवाले स्वदेश प्रेमीके आगे कामि-नी और काञ्चन दोनों निष्फल होते हैं। वालेसने औरतसे सन्धि करना अस्वीकार किया हां इतना मानलिया कि वह एडवर्डके यहां से सन्धिका प्रस्ताव लेआने वाले दूतोंकी रक्षा करेगा और मुमकिन हुआ तो उनका प्रस्ताव मंजूर कर लेगा। एडवर्ड इस समय फ्लान्डर्स की लड़ाईमें लगे थे जल्द उनके आनेकी उम्मेद न थी इससे रानी लाचार इतनेहीसे सन्तुष्ट होकर चली गईं।

स्काट सेन्ट आलबनमेंही रहे। इसी बीचमें एडवर्डके दूत सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये। सन्धिकी नियमावली तै हुई। रक्सबरा और वारविकके किले और इङ्गलेण्डमें कैद या और किसी कारणसे रहनेवाले स्काच वालेसके सपुर्द किये गये। जो स्काच सपुर्द हुए उनमें रेन्डलफ, अर्ल लोरन्, अर्लबूकन, कमिन और सुलिस मुख्य थे। वालेसने ब्रूस और सर आमिर डी वालेंसको मांगा तो एडवर्ड ने उत्तर दिया कि वह भागगये। कसपेट्रिक भीं वालेसके सपुर्द किये गये। वालेसने उन्हें आदरसे लिया। कुल एकसौ स्काच लार्ड कैद से छोड़कर एकसौ बढ़िया घोड़ों सहित वालेसके पास भेजे गये। सन्धिके नियमानुसार स्काट जब नरदारलदनमें आये तब दोनों तरफ की हस्ताक्षर सन्धिपत्र पर हुए। जब स्काट बव्वरो नगरमें पहुँचे तब उनकी संख्या ६० हजार होगई थी। यह विजयी महती सेना केरमसूरमें आई। यहां वारविक और रक्सबरा किलेकी चाबियां वालेसके हाथमें दी गईं। यह सन्धि ५ वर्षके लिये हुई।